ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

श्रावण २०८१ अगस्त २०२४

मूल्य ₹ ३०

कविता

पकड़े गए कन्हाई

– डॉ. राकेश चक्र
मुरादाबाद (उ. प्र.)

नन्द यशोदा के थे प्यारे, नटखट श्याम कन्हैया।
रोज चराने ले जाते थे, प्यारी–प्यारी गैया।।
रोज मण्डली जोड़े कान्हा
ग्वाल–बाल के संग में।
खेल–खेलते नए निराले
ब्रज चौरासी रँग में।।
एक दिन बोले गोप–ग्वाल सब, प्यारे किशन कन्हाई।
माखन आज खिलाओ हमको, जीभ बड़ी ललचाई।।
कान्हा बोले चलो अभी तुम
माखन कहीं चुराएँ।
ग्वालिन के घर माखन खाएँ
मिलकर खुशी मनाएँ।।
कान्हा के सब साथ हो लिए, सारे संगी साथी।
घुसे एक ग्वालिन के घर में, मिली न चिड़िया, हाथी।।
छींके पर एक मटकी देखी
हँसने लगे कन्हाई।
ग्वालों के कंधों पर चढ़कर
मटकी पहुँच में आई।।
सब ग्वालों को माखन बाँटें, प्यारे श्याम कन्हाई।
छक–छक खाया माखन भैया, ग्वालिन घर में आई।।
गोप–ग्वाल तो भागे सारे
पकड़े गए कन्हाई।
भोली सूरत देख श्याम की
ग्वालिन है मुस्काई।।

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

श्रावण २०८१ ▪ वर्ष ४५
अगस्त २०२४ ▪ अंक ०२

संरक्षक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

जब हम अपनी विशिष्ट प्रतिभाओं का विकास कर कोई उत्कृष्ट उपलब्धि प्राप्त कर लेते हैं तो सामान्यत: एक विकार हमारे मन और व्यवहार में जन्म लेने लगता है जिससे हम अपने विषय की परिधि में ही आबद्ध होकर प्राय: देश, समाज व मानवता के प्रति उदासीन हो जाते हैं। हमें लगता है खूब परिश्रम एवं धन खर्च कर हमने जो विशेषज्ञता प्राप्त की है वह ही हमारी सीमा है। लेकिन इन सीमाओं के परे एक विस्तृत कर्त्तव्य क्षेत्र, हमारा समाज, हमारा राष्ट्र; मानवता, प्रकृति आदि के प्रति हमारा जुड़ाव बहुत सीमित रह जाना एक 'अकर्त्तव्य भावना' ही है। हमें प्रतिभा परमात्मा ने दी, समाज ने पाली-पोसी और राष्ट्र व मानवता के लिए प्राप्त हुई है हम केवल उसके धारणकर्ता हैं, ऐसी 'कर्त्तव्य भावना' ही सबके लिए हितकारी व उपयुक्त है।

बच्चो! २ अगस्त, हमारे राष्ट्र के महान रसायनाचार्य आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय जिन्हें बहुत से लोग पी. सी. राय के नाम से जानते हैं, उनका जन्मदिन है। आधुनिक भारत के रसायनशास्त्र के भीष्म पितामह कहे जाने वाले इन महान वैज्ञानिक का जन्मदिवस इस वर्ष **राष्ट्रीय रसायन दिवस** घोषित किया गया है।

इस महान विभूति का स्पष्ट कथन है कि- **हम कलाकार, व्यापारी, वैज्ञानिक, चिकित्सक आदि कुछ भी हो सकते हैं पर हमारा मानस सदैव अपने समाज और राष्ट्र के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए। किसी भी राष्ट्रीय या सामाजिक परिस्थिति में हम यह कहकर मुँह मोड़े नहीं रह सकते है कि मैं तो चिकित्सक हूँ, व्यापारी या वैज्ञानिक हूँ, छात्र अथवा शिक्षक हूँ अपने काम के अतिरिक्त शेष समाज की परिस्थिति से मुझे क्या लेना देना?** उनका मत था- ''मैं रसायनशाला का जीव हूँ, किन्तु ऐसे भी अवसर आते हैं कि टेस्टट्यूब (परखनली) छोड़कर देश की पुकार सुनी जाए।''

बंग भूमि के एक छोटे से गाँव रढूली में जन्मे इस तनमन आचरण से सम्पूर्ण राष्ट्रीय, अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न विज्ञानाचार्य का यह संदेश हममें से स्वतंत्र भारत के प्रत्येक व्यक्ति के लिए धारण करने योग्य है। तभी सार्थक होगी हमारी स्वतंत्रता। जय भारत।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- बलिदानी राजू रावत -सुरेन्द्र अंचल ०५
- मेवालाल की मिठाई -प्रकाश मनु १४
- गाँव की सेवा -महेश कुमार केसरी २२
- संगठन में शक्ति है -किशनलाल शर्मा ३०
- साँप का दु:ख -डॉ. सेवाराम नन्दवाल ३४
- बल्ला, गेंद और दोस्त -विनीता राहूरीकर ३८
- मालिक की गुलाम -नरेन्द्र देवांगन ४६

छोटी कहानी

- उमंग -डॉ. जितेन्द्र 'जीत' भागड़कर ४४

लघुकथा

- आजादी -अनिता चन्द्राकर ३३

प्रसंग

- लोकमाता अहिल्याबाई होळकर -अरविन्द जवळेकर १७
- श्री अरविन्द घोष -अभय मराठे ३२

नाटक

- झण्डा ऊँचा रहे हमारा -रजनीकान्त शुक्ल ०८

आलेख

- राष्ट्र जागरण का बीज मंत्र -विजयसिंह माली २७

कविता

- पकड़े गए कन्हाई -डॉ. राकेश चक्र ०२
- हिम्मत वाले -इन्द्रजीत कौशिक ३७
- रंग-बिरंगी राखी -पंकज तिरोले ४२
- हाथी -हरिन्दर सिंह गोगना ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १८
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २५
- छ: अँगुल मुस्कान - २६
- आपकी पाती - २९
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३६
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी ४३
- पुस्तक परिचय - ४८

बौद्धिक क्रीडा

- कृष्ण एक नाम अनेक -प्रकाश तातेड़ २४
- पहुँचाओ तो जानें -राजेश गुजर ४५
- पक्षी पहेलियाँ -श्याम पलट पाण्डेय ५०

चित्रकथा

- तिरंगा कपड़े का -देवांशु वत्स १३
- कहाँ हूँ -संकेत गोस्वामी २१
- कितनी बहनें! -देवांशु वत्स ४९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

शौर्य गाथा :

१८५७ के भी पहले जिनने फूँका क्राँति का शंख

बलिदानी राजू रावत

– सुरेन्द्र अंचल

राजसमंद जिले की भीम तहसील में राष्ट्रीय राजमार्ग ८ पर एक गाँव है बरार। बरार का एक बाड़िया है– जेमा जी का बास। यहाँ डूंगा जी हीरात (रावत) नाम के किसान के छः पुत्र थे– हूजा, भोटा, देवा, राजूड़ा, हालू और नाथू। चौथे पुत्र राजू का जन्म वर्ष १७९६ में हुआ। दस वर्ष की आयु में पिता का साया उठ गया। माँ पेमा बाई बूझणी बड़ी समझदार और जीवट वाली महिला थी।

वर्ष १८१६ में कर्नल 'जेम्स टॉड' ने मारवाड़, मेवाड़, ढूंढाड और हाड़ौती का सर्वे किया। चौरासी गाँवों को मिलाकर बरसावाड़ को तहसील बनाकर अजमेर सरकार के अधिकार में रखा गया। तब बरार में अँग्रेजी सरकार के प्रतिनिधि के रूप में एक सूबेदार नियुक्त था। कर्नल जेम्स लोमड़ी की तरह चालाक और स्फूर्ति वाला था। इसीलिए इसे इंग्लैण्ड सरकार ने टॉड (लोमड़ी) की उपाधि दी। कर्नल जेम्स टॉड वर्ष १८१७ में उदयपुर, कोटा, बूँदी और जैसलमेर का पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त होकर बरसावाड़ा आया। बरसावाड़ा का नाम कर्नल टॉड के ही कारण टॉडगढ़ पड़ा। यह नाम परिवर्तन संभवतः १८३१ में हुआ।

प्रारम्भ में मगरे के रावतों ने लगान देने से मना कर दिया। फिर वे लोग एक बैल को खाण्डा व बाण्डा करके बतौर लगान कामली घाट के आसपास छोड़ दिया करते थे। लगान के विरुद्ध बरार के रावतों ने जमकर विरोध किया। अँग्रेजों ने तीन दिन तक तोपों का घेरा डालकर ८० लोगों को मार दिया। इसके बाद लोगों ने लगान देना प्रारंभ किया। वह १८२१ दिसम्बर का दिन था। सुबह होते ही सरकारी पटवारी तेजा–मलाला अपने आदमियों के साथ लगान वसूलने पहुँचा। वे लोग जूतियाँ पहने ही हथाई पर जा बैठे। खेतों का कूंता करने और लगान के लिए आवाजें पड़ी। किसानों से धक्का–मुक्की व गाली–गलौच तो तब सरकारी आदमियों के लिए बहुत छोटी बात थी।

संयोग से २५ वर्षीय युवक राजू अपनी गायों का दूध लेकर घर जा रहा था। उसने यह अप्रिय दृश्य देखा। नया खून था। टोक दिया– ''एक तो तुम लोग हथाई पर जूतियाँ पहनकर बैठे हो, ऊपर से माँ–बहनों की गालियाँ बक रहे हो। पहले जूतियाँ उतारो फिर हथाई पर बैठो।''

पटवारी और वह भी अँग्रेज सरकार का गरजा– ''चुप! तेरी जीभ खींच लूँगा। भाग यहाँ से।''

राजू के पास दूध की चरी थी। वह अपमान का घूँट पीता हुआ घर पहुँचा। घर पर ज्ञात हुआ कि उसकी माँ के साथ भी पटवारी ने गाली–गलौच की थी। खून उबल गया। क्रोध में फुफकारता हुआ वापस हथाई पर पहुँचा और पटवारी का हाथ खींच कर हथाई से नीचे उतार दिया।

बस, धक्का–मुक्की शुरू हो गई। पत्थर बाजी भी हुई। पटवारी वगैरह गढ़ में फरियाद लेकर पहुँचे। राजू की शिकायत हुई। सूबेदार ने दोपहर को दो सिपाही राजू को पकड़ने के लिए भेजे। राजू घर पर अकेला था। पकड़ लाए और खोडाबेड़ी डालकर गढ़ की छत पर पटक दिया। राजू छूटने के लिए प्रयत्न करता रहा। गाँठ दातों से खोलकर मुक्त हुआ। तभी पहरेदार आ पहुँचा। राजू ने लपक कर उसकी बन्दूक छीन ली और रात के अँधेरे का लाभ उठाकर भाग गया। घर जाकर सारी बात बताई। माँ का आशीर्वाद लिया। प्रतिज्ञा की कि पटवारी का मस्तक माता–पीपलाज के मंदिर में भेंट करके ही अन्न–जल ग्रहण करूँगा। उसके साथ तीन अन्य भाई भी कुल्हाड़े और तलवारें लेकर पहाड़ों में जा छिपे।

सुबह जल्दी ही पटवारी अपने अंगरक्षकों के साथ हाथ–मुँह धोने के लिए नाले की तरफ निकला। राजू और उसके भाइयों ने उसका सिर काट लिया। कटा हुआ सिर लेकर पीपलाज माता के देवरे में पहुँचा। माता बहुत क्रोधित हो गई– ''तूने नरबलि देकर मुझे बदनाम कर दिया। मैं तेरी कोई सहायता नहीं कर

सकती। तू यहाँ से भाग जा।''

राजू निराश लौटा। अब उनका एक संबंधी दातांवाला रामसिंह चरेड़ भी उनके साथ हो गया। वह भी अँग्रेजों के एक जमादार जोधाराम द्वारा सताया हुआ था। दूसरे ही दिन जोधाराम को मारकर उसकी लाश लाखागुडा के नाले में डाल दी गई। इससे अँग्रेजी सरकार सतर्क हो गई। अब दिन व दिन अँग्रेज सैनिकों की सिर कटी लाशें मिलने लगी।

एक बार हालू बीमार पड़ गया। मलेरिया और खुजली हो गई। राजू और नाथू कालागुमाण गाँव में किसी से दवाई लेने गए हुए थे। रामसिंह चरेड़, दातां से रोटियाँ लेकर आ रहा था। सैनिकों ने घेर लिया। हालू मारा गया। कर्नल जेम्स के आदेश से उसका सिर बरसावाड़ा में खूंटाडी बड़ली पर लटका दिया। सख्त पहरा बिठला दिया।

कर्नल एक तीर से दो शिकार करना चाहता था। लोगों में भय व्याप्त हो जाय। भाई का मस्तक लेने राजू आये और पकड़ा जाए।

राजू व उसका भाई नाथू भीलों के वेश में लकड़ियों का बोझा लेकर बरसावाड़ा पहुँचे। अवसर पाकर हालू का सिर ले भागे। ईसाइयों के कब्रिस्तान के पास घास का ढेर (बयर) देखकर मस्तक उस पर रखकर आग लगा दी। किन्तु वह मस्तक लुढ़क कर दूर जा गिरा। तभी सैनिक पीछा करते हुए आ पहुँचे और अधजला मस्तक उन्हें मिल गया। फिर से ''खूंटाली बड़ली'' पर लटका दिया। पहरा बढ़ा दिया।

माँ पेमा बाई को सारी बातें ज्ञात हुई तो बरार के– चतरा बालोत के साथ राजू के पास समाचार भिजवाया– ''मेरे बेटे हालू को मस्तक जब तक बड़ली पर टंगा रहेगा मैं अन्न–जल ग्रहण नहीं करूँगी। उसका उचित दाह संस्कार होगा तभी मुझे चेन मिलेगा। तू डरता हो तो बन्दूक ला कर दे, मुझे दे जा।''

राजू को चेन कहा। प्रात: ४ बजे ही सैनिक वेश में उसने हमला कर दिया। पाँच सैनिक मारे गए। इसके दो साथी मारे गए। वह हालू का माथा लेकर कातर की पाटी में उतर गए। कर्नल को सूचना मिली। तुरन्त स्वयं सैनिक टुकड़ी के साथ पीछे लपका।

मांगटजी की पहाड़ी के पास कातर घाटी में हालू के सिर का दाह संस्कार हुआ। उठते हुए धुएँ से सहारे अँग्रेज भी उधर बढ़े। राजू व उसके साथी भूखे थे। एक सुरक्षित स्थान देखकर वे बाटियाँ सेकने लगे। साथी अजबा आपात टोह लेने के लिए पेड़ पर चढ़ा हुआ था। उसने सैनिकों को आते देख लिया। घाटी सकरी थी। एक के पीछे एक सिपाहियों की लम्बी कतार चली आ रही थी। अजबा आपात ने इस तरह से गोली चलाई कि एक के बाद एक करके सोलह सिपाही ढेर हो गए। इस संघर्ष में अजबा आपात मारा गया। घायल नाथू को कंधे पर डालकर राजू अपने बचे हुए तीन साथियों के साथ बायड के जंगल की ओर भागा। घायल नाथू ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। बायड के जंगल में उसका भी दाह संस्कार किया गया।

मारवाड़ के मडियाँ ठिकाने की कुँवरी चार सुरक्षा कर्मियों के साथ उसी मार्ग से अपने ससुराल भगवानपुरा डोली में बैठी जा रही थी। राजू व उसके दल को डाकू समझकर डरे। किन्तु राजू ने उन्हें स्थिति

समझाकर उनके डर को दूर किया। कुँवरी ने राजू को राखी बाँधकर भाई बनाया। उन्हें खाना भी दिया। कुँवरी ने अपने पिता मडिया ठाकुर को पत्र–लिखकर दिया कि राजू को कुछ दिनों के लिए अँग्रेजी सेना से बचाने के लिए शरण देने की कृपा करें।

राजू जानता था कि कर्नल पीछे आ रहा होगा। वह पत्र लेकर सीधा मडिया पहुँचा। ठाकुर ने ससम्मान शरण दी। यहाँ इन लोगों ने तसल्ली से भर पेट भोजन किया। कर्नल पीछा करता हुआ सारण गुरुद्वारे में तलाशी लेता हुआ मडिया आ पहुँचा। घेरा डाल दिया।

मडिया ठाकुर रामसिंह इस समय अँग्रेजों से दुश्मनी लेने की स्थिति में नहीं थे। दूसरी ओर राजू को सुरक्षित निकालना भी था।

मडियागढ़ में विवाह के गीत गाए जाने लगे। ढोल नगाड़े बाकिये बजने लगे। कुँवर साहब की बारात की निकासी धूमधाम से हुई। इस तरह राजू को बींद (दूल्हा) बनाकर तीनों साथियों को बारात के साथ सुरक्षित निकाल दिया। कर्नल निराश टाडगढ़ लौट पड़ा।

नसीराबाद व ब्यावर से अतिरिक्त सैनिक टुकड़ियाँ मँगवाकर चारों ओर जाल सा बिछा दिया। राजू ने अब बड़ाखेड़ा, कालब, कलालियाँ, खोड़माल अरनाली आदि गाँवों में घूमकर सरकारी अत्याचारों के विरुद्ध जनमानस तैयार करने तथा अपना दल सशक्त करना शुरू कर दिया। उसे धन और शस्त्रास्त्रों की आवश्यकता भी पड़ने लगी। कहते हैं कि उसने अपने विश्वस्त साथियों – परा भीलात, गांगा भीलात (बरसावाड़ा) चतरा बालोच (बरार) हुकमा रामड (कूकरखेड़ा) काना नाई)बड़ाखेड़ा) तथा माड़िया ठाकुर के सहयोग से नसीराबाद सैनिक छावनी पर डाका डालकर शस्त्रास्त्र प्राप्त किए। कभी–कभी मारवाड़ के शोषक सेठ साहुकारों से भी धन वसूल करने लगे। बायड़ के मेले में जरूरतमंदों को पैसे व कपड़े भी बाँटते थे। हामा रामड़ के पिता के मोसर के लिए पाँच सेर सिक्के व कपड़े दिये। मगर माथूवाड़ा के पास सैनिक हामा के पीछे लग गए। उससे डर कर सारे रिक्के केंबरी के कुँए में डाल दिए।

अब कर्नल ने ढील दे दी। वह ऐसे मौके की तलाश में था कि राजूड़ा को भाग निकलने का अवसर ही न मिले। एक बार कर्नल ने राजू को आड़ावाला के पास आ घेरा, किन्तु राजू का दल पहले से ही सतर्क था। मुठभेड़ हुई कर्नल के सैनिक भाग छूटे और कर्नल ने एक खाखरे के पेड़ पर छिपकर रात बिताई। प्रात: बाघमाल के चांपा जी बगतात ने उन्हें सुरक्षित टाडगढ़ पहुँचाया। अब कर्नल ने इस क्षेत्र में सरदारों से मित्रता बढ़ानी शुरू कर दी।

संयोग से चापा जी बगतात की बेटी और राजू में आकर्षण बढ़ गया विवाह का प्रस्ताव भी आया। कहते हैं– चापा जी कर्नल के मित्र थे। कर्नल की योजनानुसार राजू को बाघमाल गौड में बुलाया और कर्नल ने सोते हुए राजू को पकड़ लिया। बैलगाड़ी में लिटाकर उसके हाथ–पैर बाँधकर उसे आसपास के गाँवों में घुमाया गया। वर्ष १८२५, १८ अप्रैल दोपहर २ बजे ब्यावर में उसे सरेआम फाँसी हुई।

– ब्यावर (राजस्थान)

नाटक

झंडा ऊँचा रहे हमारा

– रजनीकान्त शुक्ल

१९१७ में महाराष्ट्र राज्य का सांगली जिला उसके मंगरोल गाँव में रहने वाले सीताराम और ढोंडीसंतू की बलिदान गाथा।

(खुले मंच पर एक ओर से चार बच्चों का गाते हुए प्रवेश)

सुनो सुनो, सुनो सुनो,
सुनो सुनो ऐ लोगो! सुन लो आजादी की दास्तान को...
याद कर रहे हैं हम अपने दर्द भरे हिन्दुस्थान को,
अत्याचार सहन करना था वो गोरे जो हम पर करते,
करें विरोध गलत बातों का, नहीं इजाजत थी अवाम को,
नहीं इजाजत थी अवाम को–३
सुनो सुनो, सुनो सुनो....

(गाने वाले बच्चे मंच पर स्थिर हो जाते हैं, दूसरी ओर से अन्य चार बच्चे गाते हुए प्रवेश करते हैं।)

सुनो सुनो, सुनो सुनो,
भोर भला डरते कब हैं अपने वन में अपने जंगल में,
ताल ठोंक कर कूद ही पड़ते पहलवान जो हैं, दंगल में,
जज्बा मन में हिम्मत तन में, कैसे वो बैठा रह सकता,
किस्सा है इक ऐसा ही, नन्हें बच्चों का यहाँ असल में,
नन्हें बच्चों का यहाँ असल में,–३
सुनो सुनो, सुनो सुनो,

(यह बच्चे भी मंच पर स्थिर हो जाते हैं। मंच पर सूत्रधार का प्रवेश।)

सूत्रधार एक– तो आओ मित्रो! आजादी की लड़ाई में इतिहास के पन्नों पर नजर डालते हैं। इसमें से एक छोटी–सी, नन्हीं–सी कहानी को आपके लिए लेकर आते हैं।

सूत्रधार दो– (दूसरी ओर से मंच पर प्रवेश करते हुए।) नमस्कार मित्र! कहानी या....

सूत्रधार एक– नहीं नहीं हकीकत है ये.....

सूत्रधार दो– क्या चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, रानी लक्ष्मीबाई की कहानी है ये.....

सूत्रधार एक– नहीं मित्र! इन सबके बारे में तो हमारे इन मित्रों ने पढ़ा है, सुना है जानते हैं ये सब.....

सूत्रधार दो– तो फिर.....

सूत्रधार एक– यह उस समय की बात है जब आजादी पाने की तड़प सारे देश में एक समान थी। क्या पूरब क्या पश्चिम, क्या उत्तर क्या दक्षिण.....

सूत्रधार दो– हाँ! क्या पुरुष क्या महिला.....

सूत्रधार एक– क्या बूढ़ा क्या बच्चे...

सूत्रधार दो– (चौंकते हुए) बच्चे! बच्चों का आजादी की लड़ाई में भला क्या योगदान हो सकता है.....

सूत्रधार एक– हाँ, हाँ! बच्चों का.....

सूत्रधार एक– सही कहा तुमने मेरे मित्र! आज हम ऐसे ही दो नन्हें बलिदानी बच्चे सीताराम और ढोढ़ीसंतू की बहादुरी की कहानी नाटक के रूप में यहाँ आप लोगों को दिखाएँगे।

सूत्रधार दो– अच्छा, कितने बड़े थे ये बच्चे...

सूत्रधार एक– इनकी उम्र थी केवल बारह–बारह वर्ष की.....

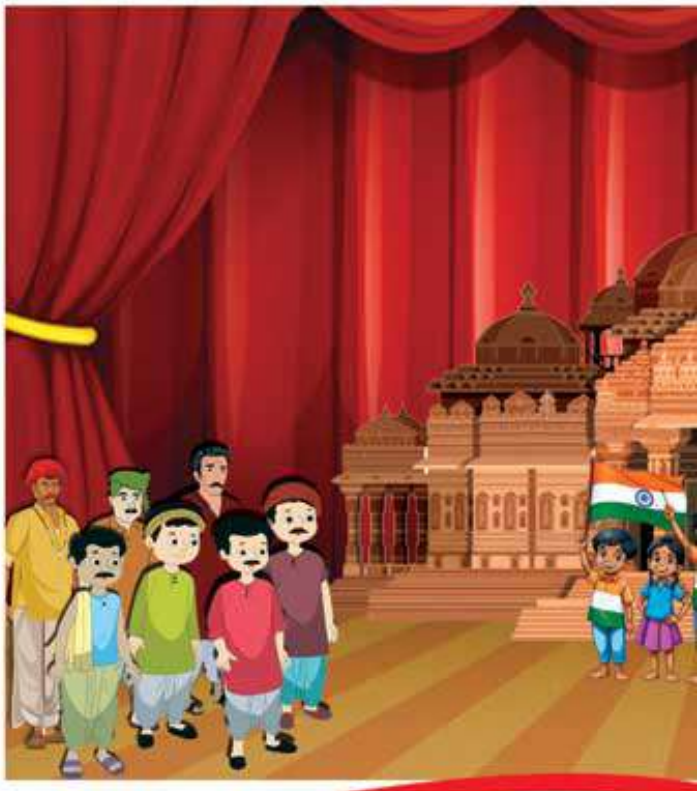

सूत्रधार दो– केवल बारह वर्ष। अरे! बारह वर्ष की आयु होती ही कितनी है।

सूत्रधार एक– हाँ, केवल बारह वर्ष। मित्रो! यह तो आपको पता ही है कि हमारा देश १५ अगस्त १९४७ को आजाद हुआ था। किन्तु हमारी यह घटना उस से ठीक तीस वर्ष पहले की थी। वर्ष था १९१७ का.....

सूत्रधार एक– और स्थान था महाराष्ट्र राज्य के सांगली जिले में मंगरौल नाम का एक छोटा–सा गाँव.....

दोनों– तो आइए मित्रो! देखते हैं आजादी की लड़ाई के इस अनोखे अन देखे रोमांचक पृष्ठ को जिसका शीर्षक है **झंडा ऊँचा रहे हमारा**

(धीरे–धीरे मंच पर अँधेरा होता है। सभी एक–एक कर मंच से बाहर की ओर चले जाते हैं।)

दृश्य पवितर्न

(मंच पर धीरे–धीरे प्रकाश होता है मुखिया सहित पाँच गाँव बैठे दिखाई देते हैं।)

एक– और ननकू! सुनाव भैया! का हाल–चाल हैं देस–दुनिया के.....

ननकू– अपनो गाँव तौ भैया इत्तो भितरो है कि हियन लौ कोई

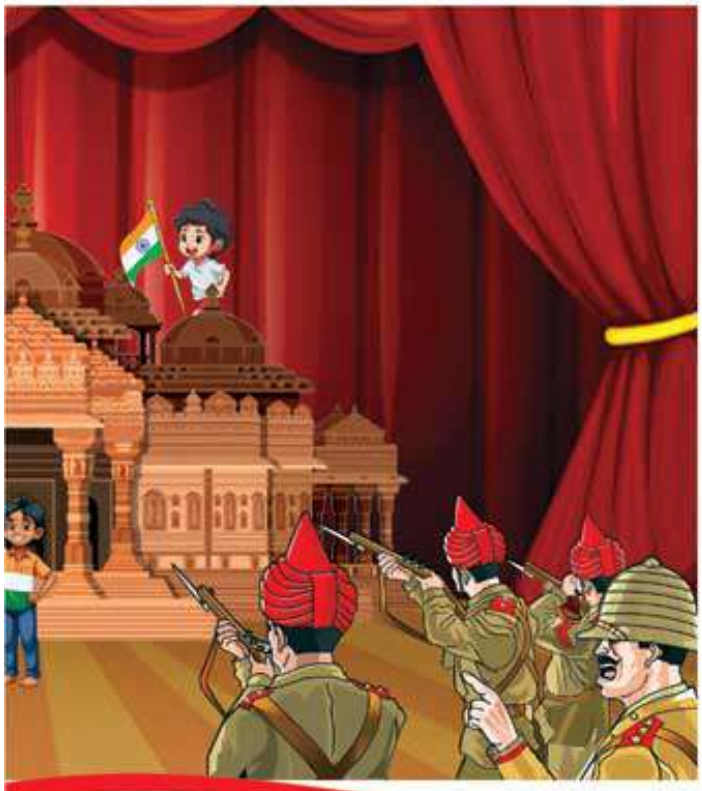

खबर मुश्किल से पहुँच पात है। अपने जटा शंकर को लड़का बाहर से पढ़–लिख के आओ है। वा सै पूछत है हाल देश–दुनिया के.....

तीसरा– लेव भाई, इधर नाम लओतौ उधर वौ आय रहो है। आओ बेटा! रामेश्वर.....

रामेश्वर–राम राम कक्का.....

मुखिया– राम राम बेटा! सुनी जात है इन अँगरेजन नै तो जीनो हराम कर रखो है।

रामे वर– हाँ, काका! ये तो है। सारा देश इनके लूट और अत्याचार से तंग है। देश में हर तरफ से इनके विरोध में आवाजें उठ रही है। लोगों का तो यही कहना है–

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रस धार नहीं,
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं,

मुखिया– वाह बेटा! जे बात तो तुमने खूब कही। और कौन से ऐसे कवित्व चल रहे हैं। लोगन के बीच में.....

रामेश्वर– काका! अब लोग देश के कंधे से गुलामी का जुआ उतार फेंक देना चाहते हैं। बहुत हो गया। तंग आ चुके हैं अँग्रेजों के इन रोज–रोज के अत्याचारों से..... अब तो सारे देश के नौजवानों के बीच में मानो ये होड़ लगी है–

भारत के वीर सपूतों की,
हाँ आज कसौटी होना है।
देखें कौन निकलता पीतल,
कौन निकलता सोना है।।

मुखिया– वाह! तबियत खुश कर दई बेटा! तुमने.....

अब तौ सबकौ सोनोई बनन परेगो।
अतिहू कर राखी है इन ससुरन नैं.....

रामेश्वर– हाँ! काका देश से बढ़कर तो कुछ भी नहीं है। ये मिट्टी, पानी, हवा और हमारा ये शरीर इसका ही तो है। किसी कवि ने ठीक ही तो ऐसा कहा है–

हमारे खून में वतन तुम्हारा ही तो रंग है,
तुम्हारी धूल से मना, हमारा अंग अंग है,

मुखिया– जे बात तौ बेटा! तुम नै बिलकुल सही कही। पढ़े–लिखे को जहे फायदो है। तुम्हैं जे सब बातैं जबानी जमा याद हैं। जीते रहौ बेटा.....

(तभी मंच के पीछे से दौड़ता हुआ एक ग्रामीण आता है और हाँफता हुआ मुखिया से बोलता है।)

ग्रामीण– अरे! कक्कू! गजब हुय गओ!

दूसरा– अरे! का भओ भइया, बताओगे भी...

ग्रामीण– अरे! अब हमाए आन–जान पे भी पाबंदी लगा दई इन अंगरेजन नै.....

चौथा– भाई! पहेलियाँ ही बुझावैगा या कुछ बतावैगा भी.....

ग्रामीण– भई बताना का, लोग कह रहे थे कि अँगरेजन ने कानून बनाय दियो है कि हम इस जंगल में पशु चरावे को ना जा सकत.....

चौथा– हैं..... जे भी कोई बात होवे। चूं (क्यों) ना जा सकैं..... बाप को राज है इन अँगरेजन को.....

तीसरा– बाप का ना भैया! इन अँगरेजन को ई राज है। वे कछू कर सकै..... कछू कानून बना सकैं...

चौथा– अरे इन की तौ.... ऐसी की तैसी.... और इनके कानूनन की भी.....

एक– इननै पहले भी तौ बहुतेरी पाबंदी लगाई थीं.....

दूसरा– लेकिन वो तो हम सब ने मिलि के हटवा दई थी।

तीसरा– हम इसे भी हटवा देंगे। इन अँगरेजन को मुँह तोड़ जबाब देंगे।

दूसरा– देख लेव भाई! जामें बहुत खतरा है....

चौथा– ओय खतरा... तुम अमर हुए के आए हौ का... मर ही तौ जाएँगे चलो जो होगी देखी जाएगी।

एक–लेकिन न फिर करेंगे क्या?

दूसरा– कुछ ऐसो जिस से इन अँगरेजन को पता लगे कि हमें जे कानून पसंद नहीं....

तीसरा– तो ठीक है चलौ जंगल में और लात हैं एक पेड़ की डाल काट के और लगात हैं अपनो तिरंगा झंडा सबन्नतै ऊपर गाँव के मंदिर पै.....

चौथा– जा ठीक बात कही तमनै... जए करौ अब.... चलौ भई आओ मीटिंग बर्खास्त.....

भारतमाता की.....

सभी बोलते हैं– जय

दृश्य परिवर्तन

(मंच पर कुछ बच्चे प्रवेश करते हैं।)

आओ भईया! रामेश्वर दादा ने जो कविता याद कराई है न, वाई की मिल के एक–एक लाइन गाएँगे।

सारे– हाँ! चलो चलो सब गाएँगे।

एक– **चाह नहीं मैं सुरबाला के,**
गहनों में गूँथा जाऊँ।

दूसरा– **चाह नहीं प्रेमी माला में बिध,**
प्यारी को ललचाऊँ।

तीसरा– **चाह नहीं सम्राटों के शव पर,**
हे हरि, डाला जाऊँ।

चौथा– **चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ,**
भाग्य पर इठलाऊँ।

चारों एक साथ– अरे! **मुझे तोड़ लेना वन माली**
उस पथ पर देना तुम फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक, –२

(कुछ ग्रामीण एक ओर से लम्बा पेड़ का तना लेकर आते हैं और कुछ दूसरी ओर से झंडा, आगे–आगे चलता ग्रामीण बच्चों को एक ओर होने को कहता है।)

ग्रामीण– शाब्बास बच्चो! जरा एक किनारे तो होव। अपनो झंडा लगावैंगे।

एक ग्रामीण– लगाओ भाई! लगाओ झंड़ा गाम में सबते ऊपर होनों चाहिए, अपनो तिरंगा झंडा.....

दूसरा– अरे कक्का! चिंता न करौ, सबन्ते ऊपर मंदिर पे लगावैंगे।

तीसरा– लगाओ भईया! लगाओ और गाओ वौ कौन सो गीत है झंडा ऊँचा वारो.....

(ग्रामीण झंडा लगाते हुए गीत गाते जाते हैं।)

एक ग्रामीण– हाँ... हाँ... झंडा ऊँचा रहे हमारा...

दूसरा– **विजयी विश्व तिरंगा प्यारा....**
झंडा ऊँचा रहे हमारा.....

तीसरा– **इसकी शान न जाने पाए.....**

चौथा– **चाहे जान भले ही जाए.....**

एक– **विश्व विजय करके दिखलावे.....**

दूसरा– **तब होवे प्रण पूर्ण हमारा.....**

सब– **झंडा ऊँचा रहे हमारा.....**

झंडा ऊँचा रहे हमारा.....

एक–हाँ, भईया! लग लियो झंड़ा, हमारी आन बान शान को... अब खबर करौ अँगरेजन कौ, कल्यो (कर लो) का करोगे हमारो....

दूसरा– खबर की जरूरत ना है भईया! भेदिया घूमत हैं उनके, उन्हें अपन्नतै खबर मिल जाएगी। और करैगे का..... पिटैंगे ससुरे.....

तीसरा– **सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,**

देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है,

चौथा– **जब तलक बाकी लहू की बूँद इक कतरे में है**

कौन कहता है, वतन की आबरू, खतरे में है,

सारे– तो चलो भैया! काम खतम,

बैठक बर्खास्त भारत माता की.....

सब– जय (सब जाते हैं।)

दृश्य परिवर्तन

(मंच के एक तरफ दो बच्चे खेल रहे हैं, सीता राम और ढोढ़ी संतू)

संतू– ओए सीता चल खेलैं अपन दोनों।

सीताराम– देख संतू कित्ती बार कही कि मेरो नाम न बिगारैतू.... मेरो पूरो नाम सीताराम है। तू मेरो आधो नाम न लियो, नई तौ फिर हम तुम्हारो हूँ नाम बिगाड़ेंगे...।

संतू– कहा कहोगे बताइयो जरा.....

सीताराम– तुम्हारो नाम ढोढ़ी संतू है। हम तुम्हें ढ़ोंगी संतू कहेंगे फिर न चिढ़ियो हमसे...

संतू– ठीक है अच्छा... अब न लेंगे अधूरो नाम... सीताराम जी, अब तौ खेलौगे हमारे साथ...

सीताराम– हाँ! अब ठीक है। आवौ खेलैंगे, हम दोनों... का खेलौगे। बताओ जरा.....

संतू– अरे वोई अपनी छिपा–छिपी... तुम चोर बन जाव। गिनती गिनौ आँख बँद करके... हम तब तक छिप रहे हैं.....

सीताराम– क्यों भाई! हम क्यों बनैं चोर..... तुम न बनौ.....

संतू– अब जेई लड़ाई करते रहोगे तो फिर खेलौगे कब... कोई बन जाए। एक बार हम एक बार तुम.... चोर–सिपाई बन जाएँगे।

सीताराम– गुईया बट्टा कर लेव। ना तुमारी ना हमारी....

संतू– अब कैसे कर लें गुईयाँ बट्टा.... दुइयै लोग तौ हंय।

सीताराम– अरे! सुनो–सुनो जे आवाज कैसी आए रही है? सुनियो तौ जरा....

संतू– आओ देखैं तो....

(नेपथ्य से पुलिस के दस्ते की कदमताल सुनाई देती है।)

अफसर– परेड विश्राम... परेड सावधान... जवानो! बाएँ से मंगरौल गाँव के लिए चलेंगे। तेज चल.....

सीताराम– जातौ अँगरेजन की फौज मालूम पर रई है। लग रई है के हमारे ई गाँम मैं जा रई है। ओए संतू आ तौ चलै देखैं चल के.....

(एक ओर से सीताराम और संतू परदे के पीछे जाते हैं। दूसरी ओर से फौजी टुकड़ी का मंच पर प्रवेश परदे के पीछे से संतू और सीताराम को झाँकता देखकर अफसर चिल्लाता है।)

अफसर– अय छोकरा लोग! टुम किडर जाता हाय.....।

संतू– हमै नाई पता। नई बताते का करोगे... चल सीता भाग...

अफसर– ओए ओए, सुनो, भाग गया साला, चलो हम खुद ही पता कर लेगा।

(कुछ सिपाही अफसर की बात सुनकर मुँह फेर कर हँसते हैं।)

अफसर– क्या हुआ? टुम क्यों हस्टा (हँसता) हाय....

सिपाही– कुछ नहीं सर..... सॉरी....

अफसर– व्हाट सॉरी.... चलो.... बाएँ से टेज चल.....

(सिपाही अफसर के साथ मार्च करते हुए मंच से बाहर निकल जाते हैं। दूसरी ओर से संतू और सीताराम का प्रवेश)

सीताराम– (हाँफते हुए) ओ कक्का..! ओ

चाचू..! आ गई अँगरेजन की पुलिस... आ जाओ सब लोग जल्दी से निकर के मंदिर पै....

संतू– बहुत सारे पुलिस वारे हैं दुइ तीन सौ के करीब.....

(नेपथ्य से आवाजें... हाँ हाँ, चिंता न करौ सीता संतू हम आए रहे हैं।)

(लोग आकर मंदिर और झंडे के चारों ओर घेरा डाल देते हैं, और गाते हैं।)

कुछ के लिए बड़ी है गीता, कुछ के लिए कुरान,
मेरे लिए सभी कुछ मेरा, प्यारा हिन्दुस्तान,
कोई करे आरती पूजा, कोई पढ़े नमाज,
अपना तो लहराए तिरंगा, अपने सिर का ताज,

(तभी फौजी टुकड़ी प्रवेश करती है।)

अफसर– ओए, टुम लोग हटो उडर से.... ये झंडा उटारो... ये नईं लग सकटा....

संतू– क्यों नईं लग सकता... ये हमाओ गाम है.... हमाओ मंदिर है.... हमाओ झंडा है.....

सीताराम– हमाओ देश है... तुम जाओ हिंआसे....

अफसर– ओए टेरी.... ये टो वो ही बदमाश बच्चे हांय जो हमें डेख के भागे ठे.... इन्होंने ही हमारे आने का न्यूज विलेज वालों को डिया होगा... आई अण्डर स्टैंड.....

सीताराम– ओए स्टैंड खड़ा रह वहीं पे..... आगे न बढ़ियो बता रहे हैं नहीं तो.....

अफसर– क्या नहीं टो.... टुमारा इटना हिम्मट... हमको जबाब डेटा हाय.....

संतू– जबाब और बात नहीं.... आगे मत बढ़ियों... कहे देत हैं नहीं तो लात भी मिलेगी....

हम नहीं डरैंगे तुम्हारी धमकियन सै..... जाव.....

अफसर– ओह... यू ब्लडी.... फायर... भून डालो इनको....

सीताराम– हाँ! चलाओ गोली, कायरो..... आज तुम्हारी गोली कम पड़ जाएँगी हमारे सीनन की गिनती के आगे....

ठांय.....ठांय.....ठांय.....

(दोनों बच्चे आह करते हुए खून से लथपथ गिर पड़ते हैं।)

एक गाँव वाला– हाय हाय हाय..... ये क्या किया जालिमो! तुमने.... बच्चों को मार दिया..... तुम्हें नर्क में भी जगह ना मिलैगी.....

दूसरा गाँव वाला– अब बचौगे तुम भी नहीं कुत्तो.....

तीसरा– भारत माता की–

सब– जय (दर्शक भी बोलते हैं।)

चौथा ग्रामीण– वंदे।

सब– (दर्शकों समेत) मारतम्।

(दर्शक बच्चों में बैठे हुए दस बच्चे अलग–अलग जगह से उठकर भारत माता की जय और वंदे मातरम् का नारे लगाते हुए मंच की ओर बढ़ते हैं। जिसे देख अँग्रेज सिपाहियों के पैर उखड़ने लगते हैं।)

अफसर– ये टो आसपास के विलेज के लोग आ रहे हांय.... लगटा हाय भागना पड़ेगा... हमारी गोलियाँ भी फिनिश होने वाली हांय.....

सिपाही– सर अब हम क्या करें.....

अफसर–हवा में फायर करो..... अपने आपको बचाओ.... भागो.... नहीं टो मारे जाओगे... चलो....

(अफसर और सिपाही भागते हैं। नेपथ्य से गीत बजता है।)

इसकी शान न जाने पाए....
चाहे जान भले ही जाए.....
(मंच के दोनों ओर से प्रवेश)

ग्रामीण– भारत माता की

सब– जय

भारत माता की जय

ग्रामीण– वंदे

सब– मातरम्

वंदे मातरम्

(कहते हुए सभी एक–एक कर परिचय देने के लिए मंच पर आ जाते हैं।)

समाप्त

– नई दिल्ली

तिरंगा
कपड़े का
चित्रकथा: देवांशु वत्स
स्वतंत्रता दिवस से पहले...
देखो, मैंने कितने तिरंगे खरीदे!
मेरे भी चार हैं!
मैं भी प्लास्टिक के दो तिरंगे खरीद लूंगा!
तभी वहां राम भी आ गया...
राम, तुमने तिरंगे नहीं खरीदे अब तक।
नहीं, और मुझे खरीदना भी नहीं है मोंटी!
वो क्यों?
क्योंकि मैंने माताजी के साथ कपड़े का तिरंगा बनाया है...
अच्छा!
हां, मेरी मां कहती है कि लोग कई सारे प्लास्टिक के तिरंगे खरीदते हैं, फिर शाम होते -होते इधर-उधर फेंक देते हैं
हां, सो तो है!
मैं शाम को अपना तिरंगा लपेट कर रख दूंगा...
...इससे यह अगले राष्ट्रीय पर्व में काम आ जाएगा और अपने तिरंगे का अपमान भी नहीं होगा!
सही कहते हो राम!

कहानी

मेवालाल की मिठाई

– प्रकाश मनु

यदि आप मुझसे बचपन के बारे में पूछें तो झट से मेवालाल की तस्वीर आँखों के आगे साकार हो जाती है। और मेवालाल को याद करते ही याद आती है, मेवालाल की मिठाई। बड़े होकर न जाने कहाँ–कहाँ घूमा–भटका, न जाने कहाँ–कहाँ के पकवान और मिठाइयाँ खाईं, जिनके नाम याद रख पाना ही मुश्किल है। इडली, डोसा–साँभर, ढोकला, 'बाजरे दी रोटी ते मक्की दा साग' से लेकर चमचम, ढोढा बरफी, कराची हलवा और राजभोग तक।

किन्तु इनमें वह बात कहाँ, जो बचपन की मेवालाल की मिठाई में थी।

ओह! वे दिन' शाम को मेवालाल आता तो हमारे पूरे मोहल्ले में जैसे हलचल मच जाती। कुछ भारी–भरकम शरीर वाला हँसमुख मेवालाल। अच्छा खासा आनंदित। हँसता तो उसका पूरा शरीर मंथर गति से हिलता था, देर तलक। सफेद पाजामे पर नीली कमीज और बंडी पहने वह किसी आसमानी फरिश्ते की तरह प्रकट होता और अपनी बैठी हुई आवाज में ''ले लो दाल–सेव.... मुरमुरे, तिल के लड्डू...।'' पुकारकर, दूर से ही अपने आने की सूचना दे देता।

पर अधिकांश तो उसे आवाज देने की आवश्यकता ही न होती। संध्या के समय हमारे मोहल्ले में भला कौन था जो उसकी प्रतीक्षा न कर रहा होता? हम सब बच्चे उसके फैन थे। और वह बेनागा आता। आता अवश्य, चाहे भीषण गर्मियों की तपिश हो या जाड़े की ठिठुरन.... या बारिशों के दिन। हर मौसम को चिढ़ाता उसका ठेला ठीक समय पर नमूदार होता और हम सब अपने बस्ते, कॉपी–किताबें, या फिर अपने–अपने किल–किल काँटे, कबड्डी, गेंदतड़ी और न जाने कौन–कौन से अटरम–पटरम खेलों को जहाँ का तहाँ छोड़कर उसकी ओर भाग लेते और उसके ठेले को घेरकर खड़े हो जाते।

वह था हमारा हीरो, और उसकी उपस्थिति में बाकी की तमाम–तमाम चीजों को भला कौन पूछे?

यों भी बच्चों से उसकी दोस्ती बड़ी जल्दी हो जाती थी। झटपट। वह बच्चे की शक्ल देखकर ही बता सकता था कि इसे दाल–सेव चाहिए, मूँगफली या फिर मूँगफली की पट्टी, या गुड़धानी... या फिर रामदाने के लड्डू, बेसन की बरफी, रेवड़ी, गजक या मूँगफली का गट्टा? लाई–चने से लेकर खोये के पेड़े या बूँदी के ताजा लड्डू तक सब कुछ उसके पास था।

और यह सब रखा होता था बड़े–बड़े कनस्तरों को काटकर बनाए गए उन टिन के डिब्बों में, जिन पर नीले ढक्कन चढ़े होते थे। जरा–सा ढक्कन खुलते ही हम उत्सुक हो उठते थे कि देखें, इस करिश्माई खुल जा सिमसिम में से कौन–सा खजाना निकलकर बाहर आता है। सबकी आँखें जैसे वहीं चिपक जातीं।

फिर एक विशेष बात यह भी तो थी, कि हमारी नन्ही–नन्ही जेबों में कुछ भी हो, चाहे एक छुटकू–सा निक्का पैसा ही, मगर मेवालाल के ठेले से कोई खाली

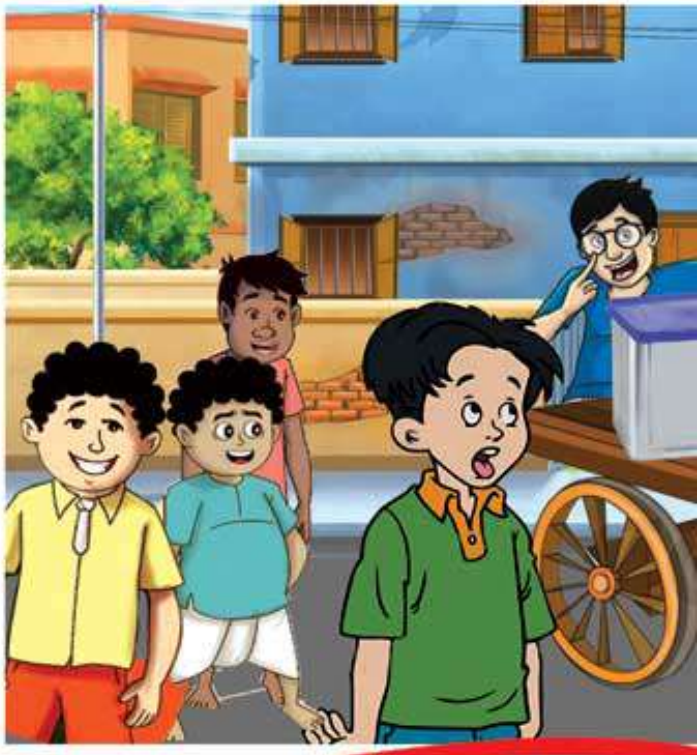

हाथ नहीं लौटता था। कभी खोए का पेड़ा, कभी बेसन का लड्डू, कभी गुड़ के सेव, कभी मुरमुरे और मूँगफली की पट्टी... और कुछ नहीं तो दो-चार संतरे की गोलियाँ, खटमिट्ठी चेमनचूस या अनारदाने का चूरन तो मेवालाल हथेली पर धर ही देता था।

किन्तु कभी-कभी तो पैसे भी नहीं होते थे। जेब में हाथ डालने पर अचानक याद आता, ओहो जी, हम तो अभी थोड़ी देर पहले ही कुल्फी या ठंडी मलाई वाली बर्फ खा चुके हैं या कि गोलगप्पे उड़ा चुके हैं। या कि नई वाली तिरंगी पतंग और मंझा आज ही खरीदा गया है। मगर मेवालाल के ठेले का स्वागत भला कैसे न किया जाए?

एक क्षण के लिए चेहरे पर हताशा आती, पर अगले ही पल हम उत्साह से अपनी पुरानी कॉपियाँ टटोलने लगते थे। दो-चार पतली-पुरानी कॉपियाँ मेवालाल के ठेले पर ले जाने पर और कुछ नहीं तो चार-छः लेमनचूस या फिर गुड़ के सेव तो मिल ही जाते थे। या फिर थोड़ा-सा मूँगफली का गट्टा, जिसे खाना नहीं, देर तक चबाना होता था और मुँह भले ही थक जाए, पर वह समाप्त होने का नाम नहीं लेता था।

हालाँकि पुरानी कॉपियों के चक्कर में कभी-कभी कुछ गड़बड़झाला भी हो जाता था। उनके साथ बहुत सारी काम की चीजें भी चली जातीं। बड़ी आफत हो जाती, जो देर तक दिल में करकती रहती।

और एक बार तो सच्ची, मेरे साथ भी यही हुआ। ओह, बड़ी विचित्र कहानी है।

असल में हुआ यह कि वह कड़की का समय था। जेब खाली, एकदम खाली थी और मेवाराम की मिठाइयाँ दूर से दिल ललचा रही थीं। तब मैंने बड़ी हिम्मत की। पिताजी की हिसाब-किताब की पुरानी कॉपी अलमारी में पड़ी थी। उसके आगे-पीछे के पृष्ठ भी कुछ-कुछ फटे हुए थे। बेकार, एकदम बेकार...।

''भला घर में ऐसी खराब-सी पुरानी कॉपी रखने की क्या तुक है, जबकि सामने मेवालाल की मिठाइयों का छबीला ठेला खड़ा है।'' मैंने सोचा। और अगले ही पल पिताजी की हिसाब-किताब की वह पुरानी कॉपी मेवालाल के ठेले पर पड़ी थी। बदले में मुट्ठी भर गुड़ के सेव क्या बुरे थे?

उस कॉपी की चोरी का पिताजी को पता चलेगा, इसका तो मुझे सपने में भी अनुमान नहीं था। वैसे भी मेरे लेखे वह फिजूल थी, क्योंकि पूरी भरी हुई थी। सो-भला उनके किस काम की? खाली होती तो फिर भी किसी काम आ जाती। सोचकर मैंने उसे बेझिझक रद्दी में बेचा और बड़े मजे में गुड़ के ताजे, स्वादिष्ट सेव खाए, जो मेरी पहली पसंद थी।

किन्तु मेरा दुर्भाग्य! उस कॉपी के गायब होने से तो घर में हड़कंप मच गया, जैसे पता नहीं कौन-सा कलंदर का खजाना लुट गया हो। पिताजी कई दिनों तक बड़ी बेकली से कभी अंदर, कभी बाहर आते घर-भर में उसे ढूँढते रहे थे और हर किसी से उन्होंने उस कॉपी के बारे में पूछा था। सबसे पहले तो माँ से ही। पर माँ ने कहा- ''मैं तो आपकी कॉपी और बहियों को छूती ही नहीं। और बच्चों को भी क्या पड़ी है उसे इधर-उधर रखने की। बेचारों को अपनी पढ़ाई से ही फुरसत नहीं। आप कहीं ओर भूल आए होंगे।''

पर पिताजी को ठीक-ठीक याद था कि वह पुरानी कॉपी उन्होंने यहीं अलमारी में रखी थी। एकदम लाल बहियों के ऊपर। यह तो ठीक है कि उसका बहुत-सा हिसाब-किताब उन्होंने नई कॉपी में चढ़ा लिया था। फिर भी कुछ हिसाब-किताब चढ़ाना अभी बाकी था और इस बीच कॉपी ऐसे गायब हो गई, जैसे कलकत्ते वाला जादूगर सबके देखते-देखते किसी की घड़ी, पेन या नोट गायब कर देता है।

''कमाल है!'' वे बार-बार अपने आप से कहते, ''कमाल है, यह हुआ कैसे? ऐसा पहले तो कभी नहीं हुआ।''

पिताजी की अपने-आप से बातें करने की आदत थी। पर उनकी वही आदत मुझ पर बहत भारी पड़ रही थी। मैं उन्हें अपने-आप से बोलते सुनता और मेरा जी धक से रह जाता।

''बेटे! कहीं तूने तो नहीं देखी वह कॉपी?'' पिताजी! ने एक बार मुझसे भी पूछा, पर मैं साफ नट गया।

''ना पिताजी! मुझे क्या करनी थी आपकी कॉपी! आपने रखी कहाँ थी? कहीं बाहर तो आप नहीं भूल आए।'' मैंने भोलेपन से पूछ लिया तो वे चुप। एकदम हक्के-बक्के निराश।

मैं मन ही मन अपनी चालाकी पर खुश था कि उन्हें उलझा दिया। एकदम निश्चिंत। लेकिन झूठ के पाँव ही कितने होते हैं। वह कभी छिपता नहीं। और फिर मेरी चोरी भी सामने आ गई। आनी ही थी।

हुआ यह एक बार शाम के समय मेवालाल से दो पैसे के सेव लेकर मैं खा रहा था। खाता जा रहा था और अपनी ढीली खाट पर झूला-झूलते हुआ मजे-मजे में तेरह का पहाड़ा भी दुहराता जा रहा था। कल ही मास्टर जी को सुनाना था। पर मुझे क्या परवाह? पहाड़ा तो याद हो ही चुका।

दाल-सेव खाते-खाते इसी मस्ती और विजय-गर्व में मैंने पुड़िया का कागज हवा में लहराते हुए फेंका और मजे में अपनी हिंदी की पुस्तक खोलकर पढ़ने बैठ गया।

इतने में पिताजी कहीं से आए और पास पड़ी कुर्सी पर बैठे तो उनकी दृष्टि उस कागज पर पड़ गई।

''कुक्कू!'' उन्होंने जोर से चिल्लाकर कहा, ''यह कहाँ से आया? कहाँ से आया यह कागज? मेरी उसी हिसाब-किताब की कॉपी का पन्ना है, जो मिल नहीं रही... अवश्य तू बेचकर आया होगा मेवालाल को। बोल, अब बोलता क्यों नहीं?''

और सचमुच मेरे मुँह से एक बोल तक नहीं निकल पाया। मैंने इस कदर पसीने-पसीने था कि मेरी शक्ल ही सब कुछ बता रही थी। चोरी की पोल खुल चुकी थी और मेरा चेहरा सफेद, एकदम सफेद!

मैं सोच रहा था, अभी पिताजी का एक चाँटा पड़ा गाल पर, अभी.... और मैं रूआँसा हो गया। लेकिन पिताजी ने कुछ नहीं कहा, केवल इतना कहा- ''बेटे! तुझे किस चीज की कमी है, जो तू रद्दी कॉपियाँ बेचता फिरता है? कितनी तो मिठाइयाँ तुझे लाकर देता हूँ, तेरा मन ही नहीं भरता?''

मैंने सिर नीचा किए-किए ही कहा- ''लेकिन पिताजी! मेवालाल की मिठाई...।''

जाने क्या हुआ कि उस भयंकर क्रोध की हालत में भी पिताजी की जोर की हँसी छूट निकली। बोले- ''ठीक है कुक्कू! तुझे रोज मैं एक इकन्नी दिया करूँगा। तू मेवालाल की मिठाई खा लिया कर। पर आगे से कसम खा, कभी कॉपियाँ बेचकर मिठाई नहीं लाएगा। तुझे ज्ञात है, कितना नुकसान कर दिया तूने? कितना जरूरी हिसाब-किताब लिखा था उस कॉपी में...।''

पिताजी के हँसते ही मुझे बहाना मिल गया मैंने झट से हथेली बढ़ाई। उन्होंने उस पर इकन्नी रखी। मैंने जल्दी से पुरानी कॉपियाँ न बेचने की कसम खाई और तीर की तरह बाहर भाग निकला। मेवालाल अभी बाहर ही खड़ा था, गया न था और इकन्नी में तो खोए के दो ताजे-ताजे बढ़िया पेड़े आ सकते थे।

- फरदीबाद (हरियाणा)

प्रसंग

लोकमाता अहिल्याबाई होळकर

– अरविन्द जवळेकर

बच्चो! आप जानते ही होंगे की इन्दौर (प्राचीन नाम इंदूर) नगर को लोकमाता अहिल्या की नगरी कहा जाता है। आपके मन में यह प्रश्न तो उठता ही होगा कि अहिल्याबाई नाम के साथ देवी और माता क्यों लगाया जाता है? जबकि दुनिया की किसी भी दूसरी रानी के नाम के साथ यह नहीं लगाया जाता। तो चलो हम आपको लोकमाता देवी अहिल्याबाई के अद्‌भुत जीवन और कार्यों से परिचित कराते हैं जो उन्हें लोकमाता और देवी का पद प्रदान करते हैं।

इन्दौर नगर जहाँ है इस भाग को मालवा का पठार कहा जाता है। इस क्षेत्र के बारे में मान्यता है कि यहाँ न तो कभी भयंकर अकाल पड़ता है न ही कभी भारी जल प्लावन होता है। ईमानदारी से मेहनत करने वाला व्यक्ति कभी यहाँ भूखा भी नहीं रहता। लोगों की मान्यता है कि यह सब पुण्यश्लोका देवी अहिल्या माता की कृपा के कारण ही संभव हुआ है।

देवी अहिल्या ने इसी मालवा तथा उससे लगे निमाड़ प्रदेश पर लगभग तीन दशक तक शासन किया था। उनकी न्यायप्रियता, धर्म–परायणता और सुशासन की कथाएँ आज भी इस क्षेत्र के प्रत्येक गाँव में लोगों की जुबान पर होती है। आओ हम आपको अहिल्या माता के जीवन के बारे में बताते हैं।

अहिल्या माता का बचपन

देवी अहिल्या माता का जन्म लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व ३१ मई १७२५ को महाराष्ट्र के संभाजीनगर के समीप बीड जिले के अन्तर्गत एक छोटे से ग्राम चौंडी में हुआ था। उनके पिता का नाम माणकोजी शिंदे तथा माता का नाम सुशीलाबाई था। पिता माणकोजी गाँव के पाटिल थे और माता गृहिणी। आर्थिक रूप से उनका परिवार भले ही अधिक धनवान नहीं था किन्तु बहुत संस्कारवान था।

बालिका अहिल्या जन्म से ही कुशाग्र बुद्धि की थी। माँ ने उस पर अच्छे संस्कार भी किए थे। माँ उसे प्रतिदिन रामायण और महाभारत की कहानियाँ सुनाती थी। वह उसे पौराणिक और ऐतिहासिक कथाएँ भी सुनाती थी। माँ ने अहिल्या को लिखना–पढ़ना और घर के छोटे–मोटे काम करना भी सिखा दिया था।

माँ उसे अपने साथ गाँव के शिव मंदिर में भी दर्शन तथा पूजा करने ले जाती थी। मंदिर में होने वाले साधु संतों के प्रवचन भी वह बड़े ध्यान से सुनती थी। इसके कारण बचपन से ही उसके सांवले और तेजस्वी चेहरे पर ज्ञान की अद्‌भुत आभा दिखाई देती थी।

उस जमाने में ७–८ वर्ष की आयु में ही बच्चों का विवाह कर दिया जाता था। स्वाभाविक रूप से अहिल्या के माता–पिता को भी अपनी इस गुणवान कन्या के विवाह की चिंता सता रही थी। क्योंकि वह अब ८ वर्ष की हो चुकी थी। किन्तु उन्हें अभी तक उसके योग्य कोई वर दिखाई ही नहीं दिया था। आखिर इतनी गुणवान कन्या के लिए उसके तोल–मोल का वर खोजना आसान थोड़े ही था।

(आगे की कथा अवश्य पढ़िए अगले अंक में।)

– इन्दौर (म. प्र.)

बाल साहित्य की धरोहर

बाल पत्रकारिता के शिखर पुरुष : योगेन्द्र कुमार लल्ला

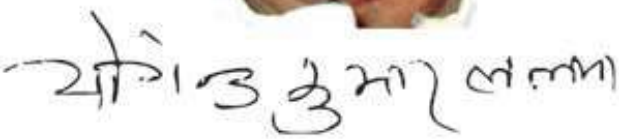

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

बाल साहित्य जगत में योगेंद्र कुमार लल्ला नाम के एक ऐसे संपादक भी हुए हैं जो जीते-जागते विश्वविद्यालय थे। उनके संपर्क में आकर लेखकों ने सृजन के गुर सीखे। रचना की स्वीकृति/अस्वीकृति भेजते हुए उनके पत्र कई बार रचना से भी अधिक लंबे हो जाते थे। वे बाल पत्रकारिता के शिखर पुरुष थे। उन्होंने अपनी संपादन कला के बल पर धर्मयुग, स्वतंत्र भारत, अमर उजाला जैसे पत्रों और पाक्षिक बाल पत्रिका मेला के माध्यम से बाल साहित्य के समर्थ लेखकों की एक टीम तैयार कर बाल साहित्य को जो ऊँचाई दी, उसका आज भी कोई सानी नहीं है। बच्चों के निष्णात कवि लल्ला जी को सरल, सहज और मनोरंजक कविताओं के लिए सदैव याद रखा जाएगा।

लल्ला जी का जन्म ५ जनवरी १९३७ मवाना, जिला मेरठ (उ. प्र.) में हुआ था। ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही अपने शिक्षक सदानन्द आर्य की प्रेरणा से उनकी पहली रचना मवाना शाला की मैगजीन में प्रकाशित हो गई थी। कम ही लोग जानते हैं कि वे एक अच्छे चित्रकार भी थे। उन्होंने अपने जीवन की पहली नौकरी एक आर्टिस्ट के रूप में शुरू की थी।

लल्ला जी की बाल कविताओं में मनोरंजन का पक्ष अत्यंत सबल है। वे रोचक अंदाज में बालक की नटखट जीवन शैली को कविता में उतारने में निपुण थे। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं– सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, तोते जी, मक्खी-मच्छर की कहानी, मन बहलाएँ, टिंग-टिंग, कंजूस जमींदार, खेल-खेल में विज्ञान आदि। उनकी संपादित पुस्तकों की संख्या सैकड़ों में होगी। मुख्यत: प्रतिनिधि बाल एकांकी, राष्ट्रीय एकांकी, हास्य एकांकी दो भाग प्रतिनिधि सामूहिक ज्ञान, प्रतिनिधि बाल सामूहिक ज्ञान-विज्ञान की कहानियाँ, भारतीय गौरव की कहानियाँ, पक्षियों की कहानियाँ, परियों की कहानियाँ, शिशुगीत (चार भाग) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। बच्चों के जन्मदिन और अन्य शुभ-अवसरों पर पुस्तकें भेंट करने के लिए उन्होंने एक 'उपहार माला' योजना प्रारंभ की थी जिसके फलस्वरूप 'बाल उपहार माला' का दस भागों में प्रकाशन संभव हुआ।

लल्ला जी मानक और बाल मन के अनुकूल बाल साहित्य के प्रकाशन के हिमायती थे। उनकी यह चिंता आज भी चिंतनीय है कि बालसाहित्य केवल प्रकाशक के लाभ के लिए प्रकाशित हो रहा है। बच्चों के साथ अन्याय हो रहा है। उन्हें मौलिक और प्रामाणिक साहित्य नहीं मिल रहा।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने उन्हें **लल्ली प्रसाद पांडेय बाल साहित्य पत्रकारिता सम्मान**

प्रदान किया था। बाल साहित्य पत्रकारिता के क्षेत्र में वे अपनी जगह अकेले हैं। उन्होंने आत्माराम एण्ड संस में लंबे समय तक बाल साहित्य की पुस्तकों का सम्पादन किया। वे केन्द्र, दिनमान टाइम्स, रविवार, स्वतंत्र भारत और अमर उजाला में सहायक सम्पादक रहे। धर्मवीर भारती की प्रेरणा से उन्होंने १९६८ से धर्मयुग के बाल जगत स्तम्भ को सम्पादित कर बाल साहित्य को बड़ों के साहित्य के सामानांतर स्थापित किया। कोलकाता से प्रकाशित बाल पाक्षिक पत्रिका मेला (१९७९ से १९८१) के संपादक के रूप में तो उन्होंने जैसे कीर्तिमान ही रच दिया। 'मेला' पाक्षिक का प्रथम अंक दीपावली विशेषांक के रूप में अक्टूबर वर्ष १९७९ में प्रकाशित हुआ था। पहले ही अंक की पचास हजार प्रतियाँ छपी थीं।

तार सप्तक के कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने उन पर केंद्रित एक मजेदार कविता लिखी थी।

कलकत्ते में खो गए लल्ला,
कहीं अगाड़ी, कहीं पुछल्ला।
घर में बैठे वे चुपचाप,
करते रामनाम का जाप।
भागे सुन मेले का हल्ला,
कलकत्ते में खो गए लल्ला।

लल्ला जी लेखकों में योकुल के नाम से विख्यात थे। उनका अंतिम समय गाजियाबाद में बीता। २४ जुलाई २०१६ को उनका निधन हो गया।

आइए, पढ़ते हैं उनकी कुछ लाजवाब कविताएँ–

स्वप्न सुहाना

एक आम का पेड़, लगा था
उस पर बहुत बड़ा रसगुल्ला,
उसे तोड़ने को सब बच्चे
मचा रहे थे हल्ला-गुल्ला!
पर मेरी ही किस्मत में था,
उसको पाना, उसको खाना!
मैंने देखा स्वप्न सुहाना!
सारे बच्चे इम्तहान के दिन
बैठे थे अपने घर पर,
खुली किताबें रखीं सामने
सभी पास हो गए नकल कर!
पर मेरी ही किस्मत में था,
सब बच्चों में अव्वल आना
मैंने देखा स्वप्न सुहाना!
ओलंपिक के खेल हो रहे,
भारत के ही किसी नगर में
बच्चा-बच्चा खेल रहा था,
घर-आँगन में डगर-डगर में!
पर मेरी ही किस्मत में था,
सारे पदक जीतकर लाना
मैंने देखा स्वप्न सुहाना!

चिड़ियाघर

चिड़िया घर में चलता रहता अजब तमाशा।
बंदर भालू से करता है रोज ठिठोली,
मामा, गंदे पानी से क्यों मूँछें धोलीं?
मामी बैठ गई कोने में गुस्सा होकर
उछलो-कूदो, नाच दिखाओ जैसे जोकर।
खुश करने को मुझसे सीखो मेरी भाषा।
हिरन कुलांचे भरता-भरता दौड़ा आता;
ठीक शेर के पिजड़े के आगे मुस्काता।
काट रहे चक्कर पर चक्कर क्यों राजा जी;
मैं हाजिर हूँ भोजन कर लो, क्या नाराजी?
जब जिराफ से मिलता हाथी कहता-भाई,
इतना लम्बा बदन, टांग क्यों पतली पाई।
सेहत अगर बनानी है तो हिलो-हिलाओ,
फुनगी के पत्ते क्या खाते, तना पचाओ।
किंटल भरकर खाओ; छोड़ो तोला माशा।

मेला

मेला हमें दिखाओ मामा!
सबसे पहले उधर चलेंगे,
जिधर घूमते उड़नखटोले
आप जरा कहिएगा उससे
मुझे झुलाए हौले-हौले।
अगर गिर गया, फट जाएगा,
मेरा नया-निकोर पजामा।
कठपुतली का खेल देखकर,
दो धड़ की औरत देखेंगे
सरकस में जब तोप चलेगी
कानों में उंगली रक्खेंगे।
देखेंगे जादू के करतब,
तिब्बत से आए हैं लामा।
फिर खाएँगे चाट-पकौड़ी,
पानी के चटपटे बताशे।
बच जाएँगे फिर भी कितने
दूर-दूर से आए तमाशे।
जल्दी अगर न वापस लौटे,
मम्मी कर देंगी हंगामा।

बिजली गुल

बिजली गुल, हो गया अँधेरा।
डरता तो मैं नहीं, मगर अब
सब कुछ दिखता काला-काला
अरे, खड़ा वह कौन वहाँ पर
लिए हाथ में लम्बा भाला?
कौन हिलाता परदा, किसकी
आँखें चमक रही हैं चम-चम,
खिड़की वह खुल गई किस तरह
कौन अभी कूदा था धम-धम?
ताक लगाकर बैठ गया क्या
घर के बाहर कोई लुटेरा।
यह कैसी आवाज आ रही
कौन रो रहा घर के अंदर,
खीं-खीं, चीं-चीं कौन कर रहा
छिपा हुआ क्या कोई बंदर?
लगता, जैसे सांप आ गया
रेंग रहा बिस्तर पर सर-सर,
कौन उड़ा अलमारी पर से
जा बैठा पंखे के ऊपर।
मैं तो नहीं भूत से डरता
डरता मेरा भाई चचेरा।
मम्मी, पापा! कहाँ गए सब
जाने कहाँ टार्च रक्खी है,
अरे! कोई तो लैम्प जलाओ
मुझको काट रही मक्खी है।
दीदी के सब काम निराले
कभी न मिलती दियासलाई,
होमवर्क कितना बाकी है
कैसे अब मैं करूं पढ़ाई?
देख रहा हूँ बड़ी देर से
बस्ता कहाँ पड़ा है मेरा!

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

कहां दूं?
चित्रकथा-
धाड़..
अरे ये तो बेहोश हो गया है, कोई पानी मारो...
मेरे पास है पानी..
उठो भई..
उं ह..आं... मैं कहां हूं?
ये जानने के लिए ये किताब लीजिए साब इसमें इस शहर का पूरा नक्शा और जानकारी है, कीमत सिर्फ पांच रुपया...

कहानी

गाँव की सेवा

– महेश कुमार केशरी

आज, अनिल और उसके मित्रों ने एम. बी. बी. एस. की परीक्षा पास कर ली थी। अनिल की जहाँ एक ओर माली हालत खराब थी। वहीं दूसरी ओर वह बहुत ही मेधावी छात्र था। सरकार से वह हर साल वजीफे पाता था। यही कारण था कि वो एम. बी. बी. एस. करने सरकारी वजीफे पर लंदन चला गया था। अनिल एक निम्न–मध्यम वर्गीय किसान परिवार से था।

अनिल के पिता किसान थे। खेती–किसानी के दिनों में तो वो खेती–किसानी करते। लेकिन, जब खेती–किसानी का समय नहीं होता। तो शहर मजदूरी के लिए चले जाते। उन्होंने बहुत कठिन परिश्रम करके अनिल को पढ़ाया–लिखाया था। अनिल के पिताजी की साध थी। कि उनका बेटा–पढ़–लिखकर डॉक्टर बन जाये।

अनिल का गाँव बहुत ही पिछड़ा हुआ था। जहाँ एक समय में नक्सलियों का खौफ था। शाम पाँच बजे के बाद वहाँ लोग घर से बाहर नहीं निकलते थे। सुदूर घने जंगलों से घिरा उसका गाँव मूलभूत सुविधाओं या अभावों से ग्रसित था। न वहाँ, समुचित पानी की व्यवस्था थी न पढ़ने के लिये विद्यालय की।

अनेक बुराइयाँ वहाँ जो फैला ही थी। सामाजिक बुराइयों के चलते ही कोई अधिकारी भरतपुर गाँव में अपना तबादला नहीं चाहते थे। अधिकारी या डॉक्टर देहात–से–देहात में भी जाने की सोचते। लेकिन, भरतपुर का नाम सुनते ही उन्हें जैसे कँपकंपी छूट जाती।

खैर; अनिल को जिस बात का सबसे अधिक दु:ख था। वो था, उसकी माँ की मृत्यु का। गाँव से अस्पताल की दूरी बहुत अधिक होने के कारण ही गाँव में ही उसकी माँ की मृत्यु अस्पताल ले जाने के क्रम में हो गई थी। उसी दिन से अनिल के पिता ने ये प्रण लिया था। कि वो अनिल को डॉक्टर ही बनायेंगे। ताकि, किसी दूसरे की माँ फिर, उस गाँव में एड़ियाँ रगड़कर ना मरे। अनिल को भी उस दिन बहुत बुरा लगा था। जब अनिल की माँ; गाँव में अस्पताल की कमी, और खराब सड़क के कारण मर गई थी।

उस दिन उसने भी ये प्रण लिया था। कि वो हर हाल में एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई करेगा। और, अपनी सेवाएँ अपने गाँव में देगा। जब ये बात उसने अपने दोस्तों को बताई थी। तो उसके दोस्त अनिल पर हँसने लगे थे।

उसके दोस्त ये कहकर अनिल की खिल्ली उड़ाते, कि तुम मेधावी और एम. बी. बी. एस. के टॉपर हो। और इसके बावजूद ऐसा सोचते हो।

तुमने लंदन से एम. बी. बी. एस. क्या इसीलिये किया है कि गाँव में जाकर अभाव भरे दिन देखो। पहले तो डॉक्टरी पढ़ते हुए, हम छात्र अपनी आधी से

अधिक जिंदगी, किताबों के आगे आँखें फोड़ते हैं। फिर, तुम कैसे बेवकूफ किस्म के आदमी हो? जो गाँव में जाकर अपनी चिकित्सकीय सेवाएँ देने की सोच रहे हो। कोई निरा उल्लू ही होगा। जो, तुम्हारी तरह अपने गाँव में जाकर अपनी सेवाएँ देगा।

खैर, ये तो हर आदमी की अपनी-अपनी सोच है। इसे कोई कैसे बदल सकता है? लेकिन, मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि, तुम्हारी तरह का कोई डॉक्टर अगर इस ढँग के निर्णय लेता है तो सचमुच में हमें बड़ा दु:ख होगा।

उस गाँव ने आखिर, तुम्हें दिया ही क्या है? ना ढँग की सड़कें वहाँ हैं। ना चिकित्सालय है। कोई अच्छी सोसायटी भी तो वहाँ नहीं है। सोचो तुम अपने बच्चों को वहाँ रखकर कहाँ पढ़ाओगे? व्यावहारिक बनो यार। किसी महानगर में अपना कोई दवाखाना खोलो। फिर, वहाँ महँगी-महँगी दवाओं को ऊँचे कमीशन पर बेचो। दवा-टेस्ट के नाम से अलग से कमाओ। शहर की सोसायटी में रहो। अपने बच्चों को किसी बड़े स्कूल में पढ़ाओ।

आखिर; क्या दिया है, तुम्हारे गाँव ने तुम्हें? जो गाँव के लिये मरे जा रहे हो।

लेकिन, अनिल लालच को अपने जूतों की नोक पर रखता था। उसे पता था। कि आज नहीं तो कल वो पैसा कमा ही लेगा। अभी चौबीस का ही तो है। बहुत आयु पड़ी है। पैसा कमाने के लिये। वो बाद में पैसा भी कमायेगा। और, उसी पैसे से गाँव में अस्पताल भी बनवायेगा।

लोगों को साक्षर करेगा। और उसके बाद शिक्षित भी। वो गाँव में रहेगा। वहीं लोगों की सहायता से अस्पताल और सड़क भी बनायेगा। लोगों को बुरी आदतों के चुँगल से छुड़वायेगा।

पीने के पानी के लिये सहकारी संस्थाओं की सहायता से लोगों के लिये पेयजल की समुचित व्यवस्था भी करेगा।

आज उसे चुनना था। मित्रों के सुझाए मार्ग को। या अपने गाँव को। और, उसने मित्रों से साफ-साफ कह दिया था। तुम मुझे बदलने का विचार छोड़ दो, तुम्हारे और मेरे रास्ते अलग-अलग हैं।

मुझे तुमसे भी अधिक अपने गाँव और उसके लोगों से प्रेम है। इस जन्म में मैं अपने गाँव की सेवा करना चाहता हूँ। ताकि, मेरे पिताजी का स्वप्न पूरा हो सके। और मैं, जीवनभर अपने पिताजी से आँखें मिलाकर बातें कर सकूँ।

और, वो लंदन से एम. बी. बी. एस. करके अपने गाँव भरतपुर लौट आया था। लेकिन, जिस लक्ष्य को लेकर वह गाँव आया था। उसे पूरा करना पत्थर से पानी निकालने के समान था।

कहने की आवश्यकता नहीं है, कि उसके कामों में जहाँ कुछ असामाजिक लोगों ने बाधा डालने का प्रयत्न किया। वहीं बहुतेरे लोगों का भरपूर सहयोग भी मिला। और, धीरे-धीरे अनिल का परिश्रम रंग लाने लगा। पहले उसने अपने अस्पताल की शुरुआत अपने ही घर से की थी। जो कि एक कच्चा मकान था।

फिर, दिन तो परिंदे की तरह होते हैं। दिन पंख लगाकर उड़ने लगे। देखते-ही-देखते दस-पंद्रह वर्ष बीत गये। अनिल की सूझबूझ से गाँव में अस्पताल भी बन गया। उसके बार-बार के आग्रह के कारण सड़क भी बनी। फिर बिजली भी गाँव में आयी। वहाँ की पंचायत समितियों और सरकार की सहायता से नशामुक्ति-केन्द्र भी बाद में खुला।

गाँव में इन दस-पंद्रह वर्षों के भीतर साक्षरता की दर भी बढ़ी। अनिल डॉक्टरी के काम से या अस्पताल से जब भी फुर्सत मिलती। बच्चों को पढ़ाने में लग जाता। एक तरह से जैसे अनिल ने अपने आपको गाँव की सेवा में झोंक दिया था।

समय मिलता तो रात्रि पाठशालाएँ भी चलाता। बच्चों को तो पढ़ाता ही। सरकार की लोक कल्याण कारी योजनाओं में बढ़-चढ़कर भाग लेता।

प्रौढ़-शिक्षा और रात्रि-पाठशाला को चलाकर सुर्खियाँ बटोर चुका था। अब आये दिन किसी ना किसी नये कार्यक्रम के चलते। अखबार में अनिल की तस्वीरें छपतीं। अनिल अब एक चिकित्सक ही नहीं थे। अब उस गाँव के रोल-मॉडल बन चुके थे।

उनका जादू अब युवाओं में चल चुका था। उन्होंने युवाओं, को पढ़ने-लिखने और प्रतियोगिता की तैयारी के अचूक गुर सिखाये थे। जिन लड़कों को उन्होंने पढ़ाया था। वे लड़के प्राय: शिक्षक या डॉक्टर ही बनने की सोचते। एक वर्ष उनका गाँव सबसे शिक्षित जिले के रूप में राज्यपाल जी के द्वारा पुरस्कृत भी हुआ था।

एक दिन स्वतंत्रता दिवस पर भरतपुर गाँव में उसके सहपाठियों को मोतियाबिंद के शिविर में भाग लेने के लिये भरतपुर गाँव आना पड़ा। स्वतंत्रता दिवस की बेला में उसके अगले दिन देश के उत्कृष्ट और विकसित और शिक्षित गाँव का पुरस्कार में भरतपुर गाँव को चुना गया था।

और इस बार ये पुरस्कार भरतपुर गाँव को मिलना तय हुआ था। सहपाठीगण सम्मान समारोह का आयोजन होने के कारण भरतपुर गाँव में ही कैंप किये हुए थे।

उस दिन गाँव में राज्यपाल महोदय के वक्तव्य में अनिल की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई थी और देश के प्रत्येक नागरिक को अनिल की तरह बनना चाहिये था। ये प्रदेश के राज्यपाल का अनिल के लिये संबोधन था।

अंतत: माला और उसके सहपाठियों को यह मानना पड़ा कि अनिल का सेवा का भाव ही सही था। उन लोगों को ये गर्व अनुभव हो रहा था। कि अनिल उनका मित्र है। और अनिल का गाँव आने का निर्णय बिलकुल सही था।

- बोकारो (झारखंड)

शब्द पहेली

कृष्ण एक : नाम अनेक

- प्रकाश तातेड़, उदयपुर (राज.)

नीचे दिए लगातार अक्षरों से कृष्ण के अधिकतम नाम खोजो।

मा	ख	न	चो	मो	ह	न	के
ध	रि	ध	र	ज	ग	दी	श
व	गि	शी	बं	र्भु	न्ना	थ	व
ब	न	वा	च	तु	श्या	ना	दे
मु	रा	री	म	क	म	ल	सु
र	र	गो	धु	न्है	या	ला	वा
ली	ध	पा	सू	द	न	न्द	न
च	क्र	ल	दे	व	की	वि	गो

उत्तर इसी अंक में।

गोपाल का चश्मा

– तपेश भौमिक

गोपाल कुछ दिनों से कुछ कम देख रहा था। यह बात जब महाराज कृष्णचंद्र तक पहुँची तब उन्होंने गोपाल को चश्मा लेने की बात कही। इस पर गोपाल बहुत प्रसन्न हुआ। दरबार में वैद्यराज की आँखों में चश्मा देखकर उसने कई बार मन–ही–मन यह सोचा भी था कि यदि वह चश्मा पहन ले तो कैसा लगे?

अब अवसर हाथ लग गया तो देर किस बात की? वह चश्मे की दुकान में गया और आँखों में चश्मा लगाकर घर लौटा। पत्नी ने उसकी खिल्ली उड़ाई और कहा कि आप तो महा पंडित जैसे लग रहे हो और चेहरा भी खिल गया है। अब गोपाल आईने के सामने खड़ा होकर अपने आपको इतना निहारने लगा कि वहाँ से हटने का नाम ही न ले। उसका मन चश्मा उतारने को नहीं हो रहा था। वह यहाँ–वहाँ चश्मा पहनकर घूमने लगा ताकि लोग उसे देखकर उसकी बड़ाई करें।

वह रात को चश्मा पहनकर ही सो गया। ऐसा देखकर पत्नी ने पूछा– ''क्यों जी! आप सोते समय भी आँख से चश्मा नहीं उतारोगे क्या? गोपाल ने तुरंत भोलेपन से उत्तर दिया– ''रात में सपने आएँगे कि नहीं? बगैर चश्मे के सपने कैसे देखूँगा?''

टका–सा जवाब

गोपाल ने एक गधा पाल रखा था। कभी–कभी मौज में आकर वह गदहे की सवारी करता, कभी कोई भारी सामान लाने के लिए भी गदहे से काम लेता। एक दिन एक पड़ोसी ने आकर कहा– ''गोपाल भाई एक दिन के लिए तुम अपना गधा उधार दे दो।''

गोपाल ने मुँह बनाते हुए कहा– ''भाई! क्षमा करना, थोड़ी देर पहले ही आकर एक व्यक्ति मेरा गदहा उधार ले गया है। थोड़ी देर पहले आ जाता तो कोई बात नहीं थी। मैं अपना गदहा उसे नहीं देता।''

बातचीत हो ही रही थी कि इतने में अस्तबल से गदहा ''ढेंचू–ढेंचू'' करके रेंकने लगा। पड़ोसी के कानों में जब आवाज आई तो उसके कान खड़े हो गए। पड़ोसी ने तुरंत गोपाल से कहा– ''गदहा आवाज दे

रहा है, तुम झूठ क्यों बोल रहे हो?''

गोपाल ने तभी गुस्से से भरकर कहा– ''क्यों भाई! तुमने मेरी बातों पर भरोसा न करके मेरे गदहे पर भरोसा कर लिया। मैं ऐसे लोगों से बचना चाहता हूँ, जो मुझ पर भरोसा न करके मेरे गदहे पर भरोसा करता है।''

दो टूक उत्तर

एक बार महाराज कृष्णचंद्र के बाग का माली बीमार पड़ गया तो बाग की रखवाली ठीक ढंग से नहीं हो पा रही थी। इधर-उधर काफी खर-पतवार उग आए थे। एक तरफ पेड़ों के कुछ भारी लट्ठ पड़े हुए थे। महाराज ने गोपाल को उन्हें दिखाकर कहा– ''क्यों गोपाल इन्हें ठेल कर हटा सकते हो? फिर खर-पतवार साफ करवाने की व्यवस्था करवा दो।''

गोपाल ने तुरंत हाँ कह दी। लेकिन दूसरे ही क्षण महाराज ने संदेह प्रकट करते हुए कहा– ''नहीं गोपाल! तुमसे यह काम न हो सकेगा। सारे लट्ठ काफी भारी हैं।''

तब गोपाल ने झट से कहा कि महाराज क्षमा करें। आज से बीस वर्ष पहले मुझमें जितनी शक्ति थी, आज भी उतनी ही शक्ति है। तब महाराज ने उसे न चाहते हुए भी अनुमति देदी। गोपाल ने बड़े ही आत्मविश्वास के साथ लट्ठ पर अपना जोर आजमाया। लेकिन लट्ठ टस से मस न हुआ। महाराज ने उसका खूब मजाक उड़ाया। तब गोपाल ने भले मानुष-सा कहा– ''मैं बीस वर्ष पहले भी ऐसा लट्ठ नहीं हटा पाता था और आज भी नहीं हटा पाता हूँ। मैंने कोई झूठ तो नहीं कहा है।''

– कूचबिहार (पश्चिम बंगाल)

छः अँगुल मुस्कान

अध्यापक छात्रा से– बड़े होकर तुम क्या करोगी?

छात्रा– शादी।

अध्यापक– मेरा मतलब है कि क्या बनोगी?

छात्रा– दुल्हन।

अध्यापक– अरे बेटी! मेरा मतलब है कि क्या प्राप्त करोगी?

छात्रा– दुल्हा।

*****

अध्यापक (छात्र से)– बताओ राजू सबसे अधिक खजूर के पेड़ कहाँ पाए जाते हैं?

छात्र–जी! डालडा घी के डिब्बे पर। (छात्र ने धीरे से उत्तर दिया।)

*****

मनोज (नीरज से)– मैं पिताजी को कैसे बताऊँ कि मैं तीसरी बार फेल हो गया हूँ?

नीरज– सीधा बोल दो, रिजल्ट आ गया है, कोई नई बात नहीं हुई है।

*****

अध्यापिका– तुम्हारे गृहकार्य में बहुत सारी त्रुटियाँ हैं।

छात्र– पिताजी बाहर गये हैं, माँ से कराया है।

*****

पति– मैं सोचता हूँ कि मैं अधिक से अधिक मेहमानों को बुला लूँ। क्योंकि यह हमारी विवाह की पहली वर्षगाँठ है।

पत्नी– बर्तन मांजने में अपनी हिम्मत देख लो।

*****

अध्यापक (छात्रों से)– बच्चो! हमें अपने पिता के नाम से पहले क्या लगाना चाहिए?

सभी छात्र– श्री।

अध्यापक– सुभाष! तुम्हारे पिताजी का नाम बताओ?

सुभाष– मतिराम।

अध्यापक– तो तुम क्या कहोगे?

सुभाष– श्रीमतिराम।

आलेख

राष्ट्र जागरण का बीज मंत्र – वंदे मातरम्

– विजय सिंह माली

राष्ट्र की जय चेतना का गान वन्दे मातरम्
राष्ट्र भक्ति प्रेरणा का गान वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध का बीज मंत्र ही हैं। इसका उद्घोष करते हुए असंख्य देशभक्त क्रांतिवीर स्वातंत्र्य सैनिक फाँसी के तख्त पर हँसते–हँसते चढ़ गए थे। एक दृष्टि से देखा जाए तो वन्दे मातरम् का इतिहास परकीय ब्रिटिश अत्याचारी शासन के विरोध में चलाए गए स्वातंत्र्य संग्राम की ही कहानी है। इस देश में वन्दे मातरम् का उद्घोष देशभक्ति की गर्जना समझी जाती रही है और रहेगी।

भारत के राष्ट्रजीवन में श्रीमद्भगवत् गीता जैसा स्थान व महत्व वन्दे मातरम् को प्राप्त हुआ है। वन्दे मातरम् ने भारत के इतिहास को नया मोड़ दिया।

वन्दे मातरम् बंकिमचंद्र चटर्जी की साहित्य लता पर खिला हुआ सर्वश्रेष्ठ पुष्प है। बंकिमचंद्र की प्रतिभा का सम्पूर्ण सौन्दर्य, सौरभ और सुधा की माधुरी इस काव्य में एकत्रित हुई। कहा जाता हैं कि १८७५ की दुर्गा पूजा की छुट्टियों में बंकिमचंद्र अपने गाँव कांठलपाड़ा जा रहे थे। बंकिम गाड़ी की खिड़की से सृष्टि का सौन्दर्य निहार रहे थे। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दृष्टि गोचर हो रही थी। सोनार बांग्ला के इस रमणीय दृश्य को देखकर कवि हृदय भारत माँ के इस अद्भुत रूप से एकाकार हो गया। इस भावविभोर अवस्था में सिंहवाहिनी, त्रिशूलधारिणी, सुवर्ण किरीटिनी माँ का रूप दृष्टिगोचर हुआ, उसका चेहरा सजीली मुस्कान से आपूरित था। इस दर्शन से उनका रोम–रोम पुलकित हो उठा और भावनाओं ने शब्द रूप लिया–

'वन्दे मातरम्, सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शुभ्र ज्योत्सनापुलकित यामिनीम्।'

आनंद मठ उपन्यास के अभिन्न अंग के रूप में यह गीत संसार के सामने आया। आनंद मठ में वन्देमातरम 'संतान सम्प्रदाय' का गीत हैं। मातृभू की संतान कटिबद्ध है माँ के लिए....। वंदे मातरम् गीत में मातृभूमि को माँ के रूप में प्रस्तुत किया हैं। 'जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी' की भावना को नया परिवेश देते हुए भूमि को अपनी श्रद्धाभक्ति का प्रतीक माता के रूप में देखने का भाव जगा और विजिगीषु वृत्ति जगाते हुए उसे शक्तिशाली दुर्गा अर्थात् अजेय शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। १८९६ ई. में काँग्रेस का १२वाँ अधिवेशन मोहम्मद रहीमतुल्ला सयानी की अध्यक्षता में हुआ। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने वन्दे मातरम् गाया। इसके पश्चात् लगातार काँग्रेस के मंच पर मंगलाचरण के रूप में इसका गायन होता रहा।

१९०५ में जब बंग भंग के विरोध में बंगाल की राजनीतिक आत्मा जाग उठी तो राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति के लिए किसी माध्यम की खोज करने लगा और यह जीवंत नारा बन गया।

क्रांतिकारी गीत के रूप में वन्दे मातरम् का सृजन युवा बंगाल ने किया। समूचा बंगाल वन्दे मातरम् की क्रियात्मक अभिव्यक्ति बन गया। वन्दे मातरम् स्वदेशी आंदोलन का प्राण बन गया। सतीशचंद्र के शब्दों में– ''स्वदेशी संग्राम जाई आत्मदान।

वन्दे मातरम् गाओ रे भाई।''

वन्दे मातरम् की ताकत देखकर ब्रिटिश सरकार की स्थिति खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे वाली हो गई। वन्दे मातरम् के उद्घोष पर ही रोक लगा दी लेकिन इसकी जनता में तीखी प्रतिक्रिया हुई। वन्दे मातरम् बीसवीं सदी में भारत की राष्ट्रीय संकल्प का यथार्थ उद्घोष बन गया। वन्दे मातरम् ने मन से अचेतन भारतीय जनता की चिति जाग्रत कर स्वाधीनता का शंखनाद प्रारंभ किया।

भगिनि निवेदिता ने वन्दे मातरम् को ध्वज में

स्थान दिया। भीकाजी कामा ने २२ अगस्त १९०७ में जर्मनी के स्टुमार्ट शहर में वन्दे मातरम् अंकित ध्वज फहराया। वन्दे मातरम् अँग्रेजी साम्राज्य की शक्ति को चुनौती देने वाला, निशस्त्र जनता की आवाज को प्रकट करने वाला सामर्थ्यशाली शब्द बन गया।

वन्दे मातरम् नाम से ६ अप्रैल १९०६ को समाचार–पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ। इस समाचार पत्र ने लोगों के मनों को क्राँति के लिए तैयार किया। अरविंद घोष ने 'वन्दे मातरम्' का अँग्रेजी अनुवाद किया। उन्होंने 'इंदुप्रकाश' में वन्दे मातरम् विषयक लेख लिखकर उसकी दार्शनिक व्याख्या की। अरविंद घोष के लेखों ने सिद्ध कर दिया कि लेखनी तलवार से भी तीखी होती है। 'वन्दे मातरम्' समाचार पत्र के लेखों को लेकर अँग्रेज सरकार ने मुकदमा चलाया। जिसने अरविंद को राष्ट्रीय मंच पर अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया। इसी प्रकार का एक मुकदमा बाबा साहब सावरकर व उनके सहयोगियों के विरुद्ध चलाया गया।

वन्दे मातरम् एक ऐसा गीत और उद्घोष था जिसने परवर्ती भारतीय युवा पीढ़ी को स्वातंत्र्य चेतना से अनुप्राणित किया था। इस मंत्र का उच्चारण करके असंख्य लोग फाँसी के फँदे पर चूमे। वन्दे मातरम् के आगे सत्ता–मद को हारना पड़ा, बंगाल विभाजन का प्रस्ताव वापस लेना पड़ा पंचनद जाग उठा, दक्षिण भारत भी वन्दे मातरम् के नारों से गूँज उठा। घर–घर की दीवारें भी वन्दे मातरम् से सुशोभित होने लगी। समुद्र पार भी वन्दे मातरम ध्वनित–प्रतिध्वनित होने लगा।

१९२३ के काकीनाड़ा अधिवेशन में जब पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर वन्दे मातरम् गाने के लिए उपस्थित हुए तो अध्यक्ष सैय्यद महमूद अली ने टोका। इस पर पलुस्कर ने तपाक से उत्तर दिया– ''यह काँग्रेस का मंच है न कि खिलाफत आन्दोलन का 'उन्होंने पूरा वन्दे मातरम् गाया। काँग्रेस की तुष्टिकरण की नीति के चलते काँग्रेस ने १९३७ में वन्दे

मातरम् की दो कड़ियाँ ही गाने का निर्णय लिया तो पं. ओंकारनाथ गाऊँगा तो पूरा गीत, वरना गाऊँगा ही नहीं। कहकर हरिपुर अधिवेशन में नहीं गए।

भारतीय स्वाधीनता १५ अगस्त १९४७ के सुप्रभात पर श्रीमती सुचेता कृपलानी ने वन्दे मातरम् गाया। स्वांतत्र्य संग्राम में वन्दे मातरम् घर–घर का गीत था। राष्ट्रगीत था। गाँधीजी भी इस गीत के प्रशंसक थे। उन्होंने १९०५ में लिखा– ''इस गीत को हमारा राष्ट्रगीत बनना चाहिए।'' फिर १९३६ में लिखा– ''कवि भारत माता को सुहासिनी, सुमधुर भाषिणी, बहुबलधारिणी, सुफला कहते हैं। मेरी राय में वह समस्त मानव जाति को अपने में समा लेती है।''

संविधान सभा मे अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने २४ जनवरी १९५० के दिन वक्तव्य दिया– 'जनगणमन' शब्द संगीत वाली रचना भारत का राष्ट्रगान हैं। वन्दे मातरम् गीत जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभायी हैं,

उसे भी जनगणमन के ही समान सम्मान दिया जाएगा। राष्ट्र ने संविधान सभा का निर्देश शिरोधार्य किया।

बी. बी. सी. ने अपनी ७०वीं वर्षगाँठ पर २००२ में विश्व के दस शीर्ष लोकप्रिय गीतों के बारे में १५५ देशों में इंटरनेट पर एक सर्वे कराया। जिसके परिणामों के अनुसार वन्दे मातरम् को दुनिया का दूसरा सबसे लोकप्रिय गीत घोषित किया गया। सचमुच वन्दे मातरम् गीत में भारत माँ का सुंदर वर्णन किया गया हैं। सुन्दर जल से सिंचित धरती सुफलां भी हैं। मलयपर्वत की शीतल वायु वाली भारत माता शस्य श्यामला हैं। इस शुभ्र ज्योत्सना में यामिनी पुलक से भर जाती हैं। फूलों से लदे सुगंध से भरे सुन्दर लगने वाले और सदैव सुख देने वाले वृक्षों से यह धरा सजी पड़ी हैं।

यह सुहासिनी सुमधुर भाषिणी हैं। सुखदायक वरदान देने वाली हैं। यह विराट स्वरूपा भारत माँ बोलती हैं तो करोड़ों कंठ मुखरित होते हैं। करोड़ों-करोड़ों भुजाओं वाली ऐसी माँ को कौन अबला कह सकता हैं। बहुत बलों को धारण करने वाली इस माँ को हम नमन करते हैं।

यह शत्रुदलों का संहार करने वाली हैं। यही विद्या हैं, हमारी भुजाओं में इस माँ की ही शक्ति हैं। हृदय में भारत माँ की ही भक्ति हैं। प्रत्येक मंदिर में तुम्हारी ही प्रतिमा हैं। तुम ही दुर्गा हो, तुम ही दशप्रहरणधारिणी हो, तुम ही लक्ष्मी का स्वरूप हो, तुम ही वाणी और विद्यादायिनी हो। तुम ही कमला, अमला अतुला, सजला सुफल देने वाली माता के रूप में नमन योग्य हो। तुम ही श्यामला, सरल, सुस्मित, भूषित, धरणी, भरणी हो। ऐसी माँ को नमन हैं, शतशत नमन हैं।

वन्दे मातरम् गीत को समग्र रूप से पढ़ने पर साफ समझ में आ जाता हैं कि देशधर्म की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए ही उसकी रचना हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य था आम लोगों में देशप्रेम जाग्रत करना। वन्दे मातरम का यह उद्देश्य काफी हद तक सफल हुआ हैं। आइए हम भी गुनगुनाएँ-

जन जन के प्रिय कंठ का हो गान वन्दे मातरम्
अरिदल थर थर कांपे सुनकर नाद वन्दे मातरम्।
वीर पुत्रों की अमर ललकार वन्दे मातरम्
राष्ट्र भक्ति प्रेरणा का गान वन्दे मातरम्।

- सादड़ी (पाली)

आपकी पाती

मान. बड़े भैया जी!

'देवपुत्र' का जून २०२४ 'छत्रपति शिवाजी अंक' स्पृहणीय प्रेरणाओं के पुंज स्वरूप विशेषांक से कमतर नहीं है। मुखपृष्ठ ही उत्कृष्ट एकांकी रचनाओं के प्रति सहज आकृष्ट करना है। हिन्दूपदपादशाही के संस्थापक शिवाजी महाराज के राज्याभिषिक्त होने के ३५० वर्ष पूर्ण होने पर आपने 'अपनी बात' संपादकीय में उनकी प्रासंगिकता को प्राथमिकता देने का भरपूर प्रशंसनीय प्रयास किया है।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२३ के मंच पर चयनित व पुरस्कृत सौ टंच एकांकी विशेष पठनीय हैं। सभी एकांकियों के शीर्षक ऐतिहासिक एवं प्रेरणात्मक प्रसंग के उद्‌बोधक हैं। उनमें राष्ट्रीयता प्रतिबिंबित है।

अंतिम रचना जो प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं की गई थी अर्थात् 'स्वराज्य सेवक शिव छत्रपति' की प्रस्तुति भी आपाद प्रेरणास्पद है। रचनाओं की चित्रात्मक झाँकी सराहने योग्य है। हार्दिक बधाई के साथ शुभकामनाएँ।

- राजा चौरसिया, कटनी (म. प्र.)

संगठन में शक्ति है

– किशन लाल शर्मा

खेल समाप्त होने पर मदारी ने बन्दरिया को जमीन में गड़े कीले से बांध दिया। फिर वह जमीन में पड़े पैसे उठाकर गिनने लगा। तभी एक आदमी उसके पास आकर खड़ा हो गया।

''क्या चाहिये?'' मदारी ने उस आदमी की तरफ देखा था।

''बन्दरिया बेचोगे?'' उस आदमी ने मदारी से पूछा।

''तुम इसका क्या करोगे?'' उस आदमी की बात सुनकर मदारी चौंका था।

''तुम्हें उससे क्या?'' वह आदमी बोला, ''तुम्हें बेचनी है, तो बोलो।''

''कितने रुपये दोगे?'' मदारी ने पूछा।

''तुम बताओ क्या लोगे?'' वह आदमी बोला।

कुछ देर सोचकर मदारी बोला– ''हजार रुपये।''

उस आदमी ने मोल भाव नहीं किया। हजार रुपये मदारी को दे दिये। मदारी ने बन्दरिया की रस्सी उस आदमी के हाथ में पकड़ा दी। वह आदमी बन्दरिया को लेकर उद्यान में आ गया। दुपहर का समय, उद्यान खाली था। वहाँ पेड़ों पर बन्दर उछल–कूद कर रहे थे। वह आदमी उद्यान में जमीन पर उसी घास पर बैठ गया। वह रस्सी पकड़कर बन्दरिया को मदारी की तरह नचाने लगा। बन्दरिया को नाचते देखकर सारे बन्दर एक पेड़ पर एकत्रित हो गये। वे सब अपने साथी को नाचते देखने लगे।

''आदमी ने हमारे साथी को क्यों पकड़ रखा है?'' एक छोटी बन्दरिया ने अपनी माँ से पूछा था।

''आदमी ने हमारे साथी को कैद कर रखा है।'' माँ ने उत्तर दिया था।

''कैद क्या होती है?'' छोटी बन्दरिया ने माँ से पूछा था।

''पकड़कर अपने वश में कर लेना।'' माँ ने अपने बच्चे को समझाया।

''जानवर को गुलाम बनाकर आदमी उसे चाहे जैसे नचा सकता है।''

''आदमी हमारे साथी को गुलाम बनाने वाला कौन होता है?'' एक नवयुवक बन्दर बोला।

''आदमी के पास दिमाग है। वह जंगल के राजा शेर तक को पिंजरे में कैद करके गुलाम बना लेता है। फिर हमारी क्या बिसात है?'' एक वृद्ध बन्दर बोला।

''हमारे पास भी दिमाग है।'' नव युवक बन्दर बोला, ''हम अपने साथी को आदमी के हाथ की कठपुतली नहीं बनने देंगे।''

''फिर क्या करोगे?'' दूसरा वृद्ध बन्दर बोला। ''आदमी हमसे अधिक ताकतवर है। हम उसका सामना नहीं कर सकते।

''क्यों नहीं कर सकते?'' दूसरा युवा बन्दर

बोला– ''हमारे पास भी दिमाग है। हम भी अपने दिमाग से काम ले सकते हैं।''

''कैसे ?'' कई बन्दर एक साथ बोले थे।

''संगठन में शक्ति है।'' पहला नवयुवक बन्दर बोला, ''आदमी इस समय अकेला है। हम सब मिलकर उस पर हमला कर दें, तो अपने साथी को छुड़ा सकते हैं।''

नवयुवक बन्दर की बात सभी बन्दरों की समझ में आ गई। सब बन्दरों ने एक साथ उद्यान में अकेले बैठे आदमी पर हमला कर दिया। बन्दरों के अप्रत्याशित आक्रमण से आदमी घबरा गया। बन्दरों ने उसे जगह–जगह पर काट लिया। वह अपनी जान बचाने को बन्दरिया को छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

बन्दरिया को मुक्त कराकर, सभी बन्दर खुशी से नाचने–कूदने लगे। नवयुवक बन्दर की सलाह और सूझबूझ से उन्होंने अपने साथी को छुड़ा लिया। सभी बन्दरों ने नवयुवक बन्दर को अपना प्रधान चुन लिया।

– आगरा (उ. प्र.)

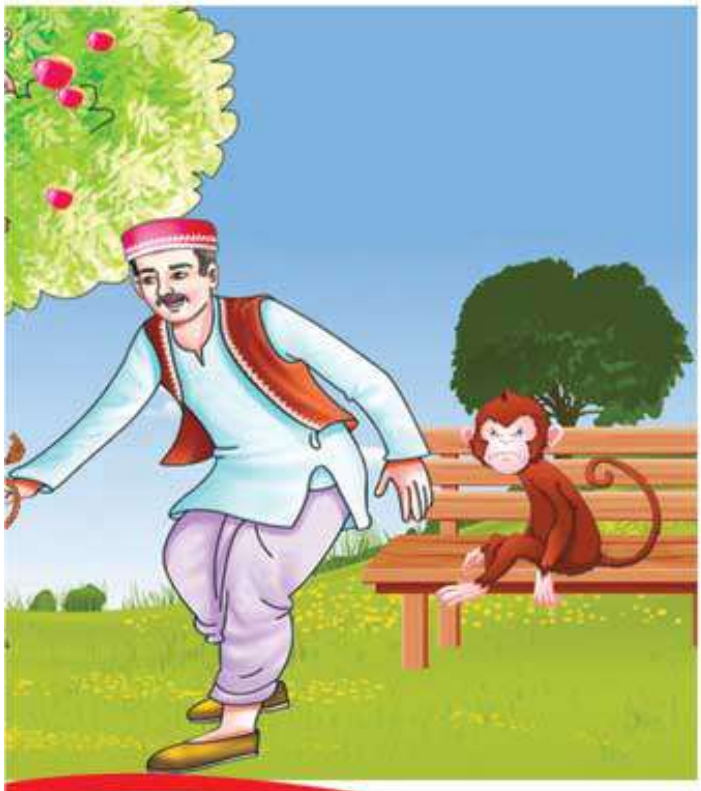

नए थल सेनाध्यक्ष की प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा हिन्दी में हुई

भारत के नए थल सेनाध्यक्ष **जनरल उपेन्द्र द्विवेदी** की प्रारंभिक शिक्षा अंबिकापुर छ. ग. स्थित हिन्दी माध्यम के विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर में ही हुई है। हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चे भी उच्च पदों पर अपना दायित्व कुशलता से निर्वाह कर देश सेवा कर सकते हैं। इसके अनेक उदाहरणों में यह एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

श्री. चौहान बने 'देवपुत्र' के प्रबंध संपादक

इन्दौर। वर्षों से विद्या भारती मध्यभारत प्रांत में विभिन्न दायित्वों का निर्वाह करने वाले साहित्य सेवक **श्री. नारायण चौहान** 'देवपुत्र' पत्रिका के **प्रबंध संपादक** नियुक्त हुए हैं। प्रबंधन के साथ गहरी साहित्यिक रुचि के धनी संपादन कर्म में कुशल श्री. चौहान का 'देवपुत्र' परिवार में भावभीना स्वागत।

शब्द पहेली के सही हल

उत्तर :– माखनचोर, मोहन, केशव, माधव, गिरिधर, जगदीश, जगन्नाथ, बंशीधर, चतुर्भुज, श्याम, वासुदेव, कमलनाथ, बनवारी, मुरारी, मुरलीधर, गोपाल, मधुसूदन, कन्हैया, नन्दलाल, चक्रधर, देवकीनन्दन, गोविन्द।

प्रसंग – जयंती १५ अगस्त

श्री अरविन्द घोष

– अभय मराठे

वर्तमान में देश में प्रशासनिक अधिकारी या पुलिस अधिकारी बनने के लिए सर्वोच्च परीक्षा जिसे आय. ए. एस. अथवा आई. पी. एस. कहा जाता है, उसे उत्तीर्ण करना आवश्यक होता है। लेकिन जब हमारे देश पर ब्रिटिश साम्राज्य का आधिपत्य था तब इस प्रकार की सर्वोच्च परीक्षा को आय. सी. एस. कहा जाता था। यह परीक्षाएँ इंग्लैंड के लंदन शहर में होती थी। जिसे उत्तीर्ण करने के पश्चात उन्हें भारत में कलेक्टर या प्रशासनिक अधिकारी बनाया जाता था।

पहले इसके केवल ब्रिटिश नागरिक ही पात्र होते थे किन्तु बाद में भारतीयों को इसमें भाग लेने की अनुमति देने लगे। इस परीक्षा को पास करने के बाद ब्रिटेन साम्राज्य की रानी के प्रति संपूर्ण निष्ठा के प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर करना आवश्यक होता था।

वैसे ही बैरिस्टर की परीक्षा देने के बाद भी ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति निष्ठा की शपथ ग्रहण पत्र पर हस्ताक्षर करना आवश्यक होता था। यह परीक्षा बहुत कठिन होती थी। (आज भी प्रशासनिक परीक्षा कठिन होती है।)

इसको उत्तीर्ण करना यानी अपना भविष्य सुखी समृद्ध करने जैसा रहता था। १९४७ के पहले कई गुलामी मानसिकता वाले लोगों ने इसे पास कर रानी एलिजाबेज के प्रति निष्ठा प्रकट की थी और भारत आकर भारतीयों पर अँग्रेजों के एजेंडे पर काम करते थे। लेकिन ऐसे कई राष्ट्रवादी विद्वत्ता से परिपूर्ण भारतीयों ने इसे येनकेन ठुकराया था। इसी शृँखला में क्रांतिवीर श्री अरविंद घोष, का प्रसंग प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्रख्यात आध्यात्मिक संत, दार्शनिक साहित्यकार और क्रान्तिकारी श्री. अरविन्द घोष के पिता डॉ. कृष्णधन घोष चाहते थे कि उनके दोनों पुत्र अरविन्द और बारीन्द्र अँग्रेजों की तरह उच्च शिक्षा ग्रहण कर, आय. सी. एस. बने। उनके पिता ने अरविन्द को इंग्लैण्ड ले जाकर केंब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश दिलवाया। श्री. अरविन्द ने विश्वविद्यालय की सर्वोच्च परीक्षा ''क्लासिकल ट्रायपोज'' प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी।

बाद में आय.सी.एस. की परीक्षा में भी, सभी विषयों में अच्छे अंक प्राप्त किये थे। उनके पिता चाहते थे कि अरविन्द आय. सी. एस. परीक्षा पास कर अँग्रेजों की तरह शासन चलाए। लेकिन अरविन्द घोष, देश के लिए कुछ करना चाहते थे, वे आय. सी. एस. परीक्षा उत्तीर्ण करते, तो उन्हें भारत में अँग्रेजी सरकार के अंतर्गत प्रशासनिक सेवा में काम करना पड़ता। इसके लिए उन्होंने एक युक्ति की, आय. सी. एस. परीक्षा के लिए घुड़सवारी की परीक्षा आवश्यक थी। अत: वे उसमें जान बूझकर अनुत्तीर्ण हो गए। उनके पिता बड़े निराश हुए।

श्री. अरविन्द घोष का उद्देश्य केवल पेट भरने का नहीं था अपितु वे भारत देश की स्वतंत्रता के लिये कुछ करना चाहते थे। स्वदेश आकर वे गुजरात के वडोदरा नरेश के निजी सचिव और बाद में वडोदरा महाविद्यालय में उपप्राचार्य के पद पर कार्य किया था। बाद में कोलकाता के यादवपुर राष्ट्रीय महाविद्यालय के प्राचार्य भी रहे।

बंग–भंग आंदोलन में श्री. अरविन्द ने विप्लवियों का नेतृत्व किया और मुरारीपुकुर के बम निर्माण कारखाने में सहयोग भी दिया। मुरारीपुकुर बम कारखाने पर पुलिस का छापा पड़ा और श्री. अरविन्द घोष सहित अनेक क्रान्तिकारियों को बन्दी बनाकर 'अलीपुर बम केस' के अन्तर्गत अभियोग चलाया गया। यह महान आत्मा जेल के सींखचों में बंद हो गई। सरकार का प्रयास था। अरविन्द घोष को फाँसी हो और उसके लिए गद्दार नरेंद्र गोस्वामी को सरकारी गवाह बनाया। लेकिन अपने नेता को बचाने के लिए क्रान्तिवीर कन्हाईलाल दत्त और सत्येन्द्रनाथ बोस ने गद्दार नरेन्द्र गोस्वामी का न्यायालय में बयान देने के पूर्व ही वध कर श्री. अरविन्द घोष सहित ३५ क्रान्तिकारियों को फाँसी से बचाकर, दोनों ने फाँसी का फँदा चूमा।

श्री. अरविन्द घोष के प्रखर राष्ट्रवाद के विचार उनकी पुस्तक ''भवानी मंदिर'' में मिलते हैं। बाद में वे आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलकर, उन्होंने मानव कल्याण का मार्ग अपनाकर पांडिचेरी (पुडुचेरी) में आश्रम स्थापित भी किया था।

– उज्जैन (म. प्र.)

आजादी

– अनिता चंद्राकर

स्वतंत्रता दिवस आने वाला था। कक्षा में गुरुजी बच्चों को स्वतंत्रता संग्राम के बारे में पढ़ा रहे थे। उन्होंने बताया कि गुलाम भारत को स्वतंत्र कराने के लिए भारतवासियों को अनगिनत बलिदान देना पड़ा। उन्हें अत्याचार और दर्द झेलना पड़ा। गुरुजी ने बच्चों को समझाया कि आजादी से बढ़कर कोई सुख नहीं है, सोने का पिंजरा भी हमें वह खुशी नहीं दे सकता जो खुशी आजादी में है। मनुष्य के साथ-साथ सभी पशु-पक्षियों को भी अपनी आजादी प्यारी होती है। उन्हें भी कैद में रहना पसंद नहीं।

यह सब सुनते-सुनते राजू को विचार आया कि वे लोग भी तो अपने तोते को पिंजरे में बंद करके रखते हैं। क्या तोते को भी हमारा घर अच्छा नहीं लगता होगा? क्या वह भी उड़ना चाहता होगा? राजू के मन में ऐसे कई प्रश्न जन्म ले रहे थे।

वह घर पहुँचकर सबसे पहले अपने तोते को देखा। तोता पिंजरे में इधर-उधर चोंच मारते हुए बाहर निकलने का प्रयास कर रहा था। राजू को देखकर तोता मिट्ठू-मिट्ठू बोलने लगा। फिर राजू ने उसे हरी मिर्ची खिलाई।

रात में तोते को दाल-चावल खिलाकर वह उसे बहुत देर तक देखता रहा। राजू की माँ बोली- ''क्या हुआ बेटा! आज तुम इतने चुपचाप क्यों हो? मिट्ठू को सोने दो, और चलो तुम भी खाना खा लो।''

सभी लोग खाना खाकर सोने चले गए पर राजू को नींद ही नहीं आ रही थी। बार-बार गुरुजी की बातें याद आ रही थी। आसमान में उड़ते पक्षी और पिंजरे में बंद अपने तोते के बारे में वह सोचने लगा। ''पेड़ों पर फुदकती और फल-फूल खाती हुई चिड़ियाँ कितनी प्रसन्न रहती हैं। एक साथ चहचहाते हुए पक्षी बहुत सुंदर लगते हैं।

उसका तोता अकेले पिंजरे में बंद रहता है, कोई साथी भी नहीं है उसका। वह तो उड़ भी नहीं पाता, पिताजी उसके पंख भी काट देते हैं। यदि मुझे अकेले अपने साथियों से दूर किसी कमरे में बंद कर दिया जाए तो मेरा क्या होगा।''

यही सोचते-सोचते उसकी आँख लग गई। वह सुबह सबसे पहले उठकर अपने मिट्ठू के पास गया और पिंजरे का दरवाजा खोलकर उसे मुक्त कर दिया। तोता बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहा था, वह उड़ते-उड़ते बहुत दूर चला गया।

जब घर के बाकी लोग उठे तो पिंजरे को खाली देख परेशान हो गए। सब लोग मिट्ठू को इधर-उधर खोजने लगे। राजू की माँ मिट्ठू-मिट्ठू करके आवाज दे रही थीं। ''मिट्ठू कहाँ चला गया होगा, पिंजरे का दरवाजा किसने खोला होगा, क्या रात में दरवाजा बंद नहीं था?'' राजू की माँ मन ही मन बुदबुदा रही थी।

सबको परेशान देख राजू ने डरते-डरते सारी बातें बता दी। ''माँ आजादी तो सबको प्यारी होती है ना! मिट्ठू को भी तो खुले आसमान में उड़ने का मन करता होगा। हम आजाद हैं तभी तो खुशी-खुशी स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, इसीलिए मैंने मिट्ठू को भी आजाद कर दिया।''

घर वालों ने राजू की बात सुनकर उसकी बहुत प्रशंसा की।

– दुर्ग (छत्तीसगढ़)

साँप का दु:ख

– डॉ. सेवाराम नन्दवाल

दोनों भाई–बहन! कुश और भव्या, कॉलोनी की दुकान से कुछ सौदा लेकर लौट रहे थे। रास्ते में एक पेड़ के नीचे भव्या को अचानक एक साँप दिखाई दे गया। वह लगभग चीखते हुए बोली– ''भैया! साँप?'' दोनों बच्चे सहमकर अपने कदम पीछे लौटाने लगे। आत्मरक्षा के लिए कुश ने एक पत्थर उठाकर मारने की स्थिति बना ली। साँप ने कराहते हुए कहा– ''मैं तुम्हें क्या मारूँगा मैं स्वयं अधमरा हूँ। घबराओ नहीं बच्चो! मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।''

बच्चों की जान में जान आई। कुश ने कहा– ''लेकिन आज तो नागपंचमी है, तुम्हारी खुशी का दिन, जन्मदिन, जगह–जगह पर तुम्हारे जयकारे गूँज रहे हैं और 'नाग को दूध पिलाओ' की ध्वनि सुनाई दे रही है।'' भव्या ने भी सुर में सुर मिलाया– ''सब जगह तुम्हारी पूजा हो रही है, आवभगत हो रही है। सब लोग तुम्हें दूध पिलाने को आतुर हैं, रुपये–पैसे चढ़ा रहे हैं। कपड़े–अनाज दान कर रहे हैं। आज तो तुम्हारी पाँचों अँगुलियाँ घी में हैं। और सिर कढ़ाई में।''

साँप ने कराहते हुए कहा– ''पाँचों अँगुलियाँ तो मेरी होती ही नहीं है तो क्या घी में होंगी पर सिर दूध में तो हैं।'' ''आज तो तुम सांपों को इतना दूध पीने को मिल जाएगा कि वर्ष भर का कोटा पूरा हो जाए।'' कुश ने कहना चाहा।

''यही तो त्रासदी है। बच्चों कि जो चीज हमें पसंद नहीं वही आज के दिन हमें भरपूर पिलाने का प्रयत्न किया जाता है।'' साँप ने पूर्ववत अंदाज में कहा। दोनों बच्चे हैरानी में पड़ गए। कुश बोल पड़ा– ''क्या बात कर रहे हैं साँप? क्या दूध आपको पसंद नहीं, मुझे भी नहीं।''

''दूध तो हमें भी बिलकुल पसंद नहीं।'' साँप बोला। ''लेकिन हम तो सुबह से देख रहे हैं, सपेरा तुम्हारा मुँह पकड़कर दूध के बर्तन में डालता है और तुम गटागट एक साँस में पी जाते हो।'' कुश ने आक्षेप लगाया।

''ऐसी अनेक भ्रान्तियाँ फैला रखी हैं तुम लोगों ने हमारे बारे में। और फिल्मवालों ने तो अति कर रखी है। हमारी महिमा मंडित करने में कि हम ये कर सकते हैं, वह कर सकते हैं।'' साँप ने आरोप लगाए।

''लेकिन साँप! ऐसा कैसे हो सकता है। दूध पीने का दृश्य तो स्वयं अपनी आँखों से देखा है।'' भव्या बोली। ''अब क्या करें... सपेरा हमारा मुँह पकड़कर जबरदस्ती दूध के बर्तन में डालता है और तुम लोगों को लगता है कि हम दूध गटक रहे हैं।''

''हाँ, हमें तो ऐसा ही आभास होता है।'' कुश ने कहा। ''इसके पीछे की सत्यता बताऊँ? होता यह है कि नागपंचमी के एक–दो महीने पहले से हमें भूखा–प्यासा रखा जाता है।'' साँप ने बताना चाहा।

दोनों बच्चों के मुँह आश्चर्य से खुले के खुले रह गए। भव्या ने पूछ लिया– ''क्यों?'' ''ताकि आस्था और श्रद्धा के वशीभूत होकर जब नागपंचमी के दिन श्रद्धालु हमें दूध पिलाएँ तो, प्यास बुझाने की लालसा में हम दूध पी लें।'' साँप ने बताया।

''फिर...?'' भव्या ने प्रश्न किया। ''फिर क्या हम पी लेते हैं। तब वास्तव में दूध पीकर हम अपनी मृत्यु को निमंत्रण दे रहे होते हैं।'' साँप ने सत्य बताया। ''किन्तु शास्त्रों में भी दूध पिलाने की बात कही गई है।'' कुश ने तर्क किया। ''शास्त्रों में दूध पिलाने की नहीं दूध से अभिषेक की बात कही गई है।'' साँप ने तर्क का खंडन किया।

''दूध से वैसे क्या नुकसान होता है आपको?'' भव्या ने जानना चाहा।

''दूध पीने से हमारा पाचनतंत्र खराब होता है।

एक महीने पहले सपेरे हमारी विषग्रंथि नुकीले हथियार से निकाल लेते हैं जिससे हम बुरी तरह से घायल हो जाते हैं फिर जबरदस्ती दूध पीने से हमारी रही सही शक्ति भी निकल जाती है। पता है इससे हमारी आँतड़ियों में गहरे जख्म बन जाते हैं और हमारी जिंदगी की उल्टी गिनती शुरू हो जाती है।'' व्यथित स्वर में साँप ने अपना दु:ख व्यक्त किया।

''याने सँपेरे तुम्हारे शुभेच्छु नहीं हत्यारे होते हैं?'' कुश ने आश्चर्यपूर्वक रोष व्यक्त किया।

''वे केवल अपने रोजगार के बारे में सोचते हैं। बच्चों तुम स्वतंत्रता का अर्थ भली-भाँति समझते हो।'' साँप ने विनम्र स्वर में में कहा।

''हाँ, जानते हैं, समझते हैं, शाला में भी पढ़ते हैं।'' भव्या ने स्वीकारा।

''स्वतंत्रता सभी को जान से भी अधिक प्यारी होती है। जंगल में प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में फिरने वाले हम साँपों को जब छोटी-सी पिटारी में बंद कर दिया जाता है जिसमें हिलने-डुलने तक की स्थिति नहीं होती तो हमारा दम घुटने लगता है।'' सांप ने वास्तविकता बताई।

''हाँ! साँस लेने में बहुत अधिक कष्ट होता होगा?'' कुश ने सहानुभूति व्यक्त की। ''यही नहीं कई बार पिटारी की टूटी फाँस हमें चुभ जाती है। जिससे हम घायल होते रहते हैं।'' साँप ने आगे बताया।

नाग की व्यथा-कथा सुन दोनों बच्चों का दिल सहानुभूति से भर आया। भव्या ने पूछ लिया- ''बताइए, आप हमसे किस प्रकार के सहयोग की अपेक्षा करते हैं?'' दोनों बच्चों के मन से अब साँप का भय पूरी तरह निकल चुका था और उसके स्थान पर सहानुभूति का भाव जाग्रत होने लगा था।

''यही कि किसी भी कारण से, यहाँ तक कि धार्मिक कारणों से भी हम निरीह प्राणियों को नहीं सताया जाए क्योंकि हम पर्यावरण हितैषी और कृषि मित्र भी हैं।'' साँप ने अपनी उपयोगिता दर्शाई।

''आप पर्यावरण हितैषी और कृषि मित्र किस प्रकार से हैं सर्पराज?'' कुश ने जानना चाहा।

''देखो बच्चो! अनाज के सबसे बड़े शत्रु मूषक होते हैं और उनका हम सफाया करते-रहते हैं।'' सांप ने बताया।

''ठीक है आपने हमारी आँखें खोल दी। हम आपकी सुरक्षा का अभियान चलाएँगे। हम आपको आश्वस्त करना चाहते हैं कि हम अपने परिजनों, मित्रों को समझाने की चेष्टा करेंगे कि वे अकारण आपको तंग न करें।'' कुश ने कहा।

''वैसे भी आपको इस तरह से पकड़कर पालना और अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करना दण्डनीय है, क्रूरता है।'' भव्या बोली। ''आपको किसी औषधि या उपचार की आवश्यकता हो तो बताइए।'' कुश ने पूछा। ''तुम्हारी बातचीत से मेरी पीड़ा कम हो गई यही बहुत है।'' साँप ने कहा। दोनों बच्चे हाथ जोड़कर अपने घर की ओर चल पड़े।

भव्या आँख मलते उठ बैठी। साँप से बात तो सपने में ही हुई, पर सपना था सच्चाई भरा।

- इन्दौर (म. प्र.)

पाण्डवों की पाँचाल-देश यात्रा

– मोहनलाल जोशी

एक दिन युधिष्ठिर ने माता कुन्ती और भाइयों से कहा– ''अब हमको एकचक्रनगरी से आगे चलना चाहिये। एक नगर में बहुत दिन रहना अच्छा नहीं।''

तभी वहाँ पर कुछ ब्राह्मण आये। वे एकचक्र नगरी में विचित्र तरह की कहानियाँ सुना रहे थे। उन्होंने लाक्षागृह की कथा भी कही। पाण्डव भी सब कुछ सुन रहे थे। उन्हें कोई पहिचानता नहीं था। ब्राह्मणों ने कहा– ''पाँचाल देश में द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है। हम सभी स्वयंवर देखने जा रहे हैं आपकी भी इच्छा हो तो हमारे साथ चलो। हो सकता है द्रौपदी तुम्हारे में से किसी को वर चुन ले।''

पाण्डवों को नगर छोड़ना ही था। वे ब्राह्मणों के साथ चल दिये। पाण्डव पाँचाल देश पहुँच गये। वे नगर के बाहर एक कुम्हार के घर रुक गये। स्वयंवर की प्रतीक्षा करने लगे।

द्रौपदी का स्वयंवर

पाँचाल देश के कांपिल्य नगर में द्रौपदी का स्वयंवर था। अनेक देशों के राजा आये थे। विशाल मंडप बनाया गया। हजारों दर्शक आये थे। एक तरफ अनेक ब्राह्मण बैठे थे। पांडव भी ब्राह्मण वेश में थे। वे ब्राह्मणों के बीच में बैठ गये।

राजा द्रुपद के पुत्र का नाम धृष्टद्युम्न था। उसने सभी राजाओं का परिचय कराया। दुर्योधन भी अपने भाइयों के साथ आया था।

धृष्टद्युम्न ने कहा– ''जो वीर नीचे पानी में देखकर ऊपर घूमती हुई मछली का निशाना लगायेगा, उससे द्रौपदी का विवाह होगा।''

धनुष-बाण भी वहीं रखा था। अनेक राजा आगे आये। किसी से धनुष नहीं उठा तो किसी से बाण नहीं चढ़ा। सारे राजा हार गये। तब ब्राह्मणों के बीच से अर्जुन आगे आया।

उसने धनुष पर बाण चढ़ाया और मछली की आँख को भेद दिया।

मंडप में जय-जयकार होने लगी। द्रौपदी ने अर्जुन को वरमाला पहनाई।

पाण्डवों का हस्तिनापुर आगमन

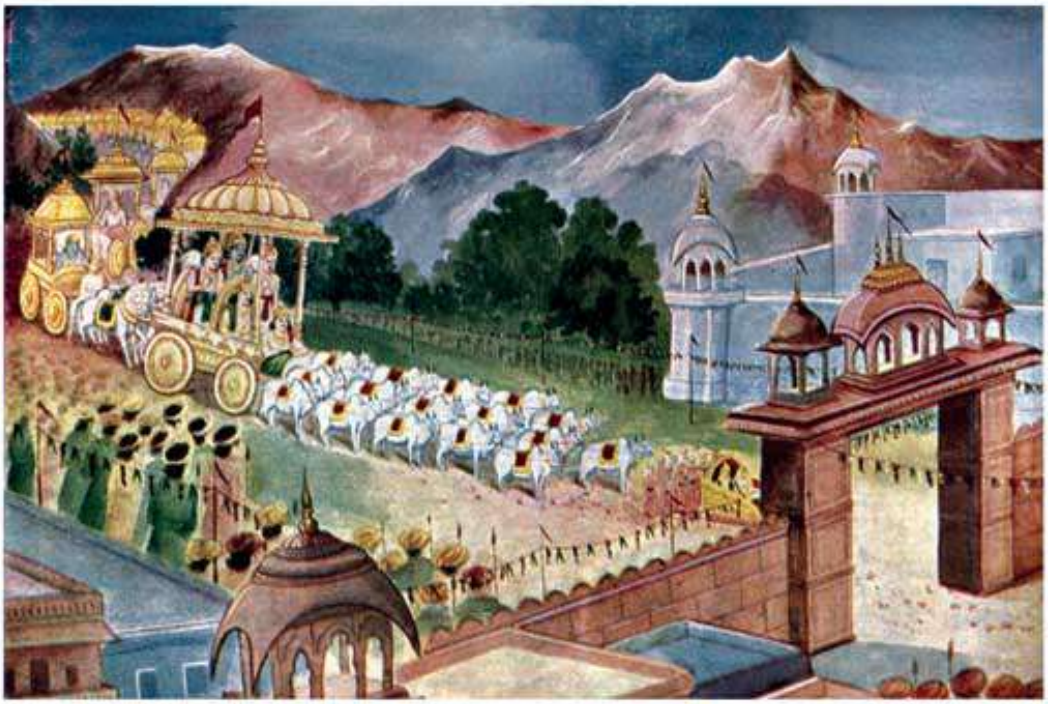

हस्तिनापुर में सभी को ज्ञात हुआ कि पाण्डव जीवित हैं। दुर्योधन, कर्ण और शकुनि को बहुत दु:ख हुआ। भीष्म पितामह ने धृतराष्ट्र को कहा– ''पाण्डव बहुत ताकतवर हो गये हैं। अब तो राजा द्रुपद भी उनके साथ हैं। पाण्डवों से वैर करना अच्छा नहीं। मिल–जुलकर रहने में ही कौरवों का हित है।''

धृतराष्ट्र ने विदुर जी को पांचाल देश भेजा। उनसे कहा– ''पाण्डवों को आदरपूर्वक लेकर आओ। विदुरजी पांचाल देश गये। राजा द्रुपद ने उनका बहुत सम्मान किया। पाण्डव विदुरजी के साथ हस्तिनापुर आ गये। वहाँ की प्रजा बहुत प्रसन्न हुई। कौरवों और पाण्डवों में झगड़ा न हो, इसलिये धृतराष्ट्र ने खाण्डवप्रस्थ का क्षेत्र युधिष्ठिर को दे दिया। युधिष्ठिर खाण्डवप्रस्थ के राजा बन गये।

– बाड़मेर (राजस्थान)

कविता

हिम्मत वाले

– इंद्रजीत कौशिक
बीकानेर (राज)

हिम्मत वाले जो होते हैं
वे ही मंजिल पाते,
अपने साहस के बल पर ही
आगे बढ़ते जाते।

हिम्मत का मतलब क्या होता
आओ तुम्हें बताएँ,
हिम्मत को हासिल करने की
राह तुम्हें दिखलाएँ।

सच्चाई की राह पर चलकर
हिम्मत को हम पाएँ,
कभी किसी से नहीं डरें हम
यह बात समझाएँ।

अनाचार अत्याचारों का
करें सामना डटकर,
अगर कहीं होता देखें तो
कभी न बैठें चुप कर।।

कमजोरी और कायरता से
रहे कभी न नाता,
अपने ही बूते बन जाओ
अपने भाग्य विधाता।

बल्ला, गेंद और दोस्त

– विनीता राहुरीकर

जबसे दादाजी आए थे तभी से देख रहे थे कि विशाल आजकल पूरे समय अपनी माँ का मोबाइल लेकर उस पर गेम खेलता रहता है। यदि किसी का फोन आ गया तो बड़े बेमन से फोन माँ को देता है। और बात पूरी होते ही पुन: फोन लपक लेता है।

पिछली बार तीन वर्ष पहले जब वे यहाँ आए थे तब विशाल छ: वर्ष का था। सारा समय दादाजी के आगे–पीछे ही घूमता रहता था। उनसे गाँव की बातें पूछता, दुनिया–भर की कहानियाँ सुनता। अपना गृहकार्य उनके पास बैठकर करता, उनके साथ प्रतिदिन संध्या को सैर करने जाता।

किन्तु अब तो जैसे वह कोई दूसरा ही विशाल हो गया है। ना उसे कहानियाँ सुनने में रूचि है और ना ही वह दादाजी के साथ सैर करने जाता है। शाला भी बहुत बेमन से जैसे–तैसे जाता है। गृहकार्य भी माँ के दस बार कहने के बाद जल्दी–बाजी में करता है। दादाजी गाँव में खेती का काम देखते हैं जबकि विशाल अपने माता–पिता के साथ शहर में रहता है।

उसके दादाजी बीच–बीच में उससे मिलने शहर आते रहते। छुट्टियों में विशाल गाँव चला जाता। लेकिन कोरोना वायरस और फिर लॉकडाउन के चलते न दो वर्ष से विशाल गाँव जा सका न दादाजी ही यहाँ आ सके थे। अब जब दो वर्ष बाद दादाजी यहाँ आए हैं तो विशाल एकदम बदल गया था।

''यह इसे क्या हो गया है बहू हर समय बस फोन पर ही गेम खेलता रहता है। इसके लिए बाहर जाकर खेलना–कूदना आवश्यक है ताजी हवा में। सारा दिन घर में बस

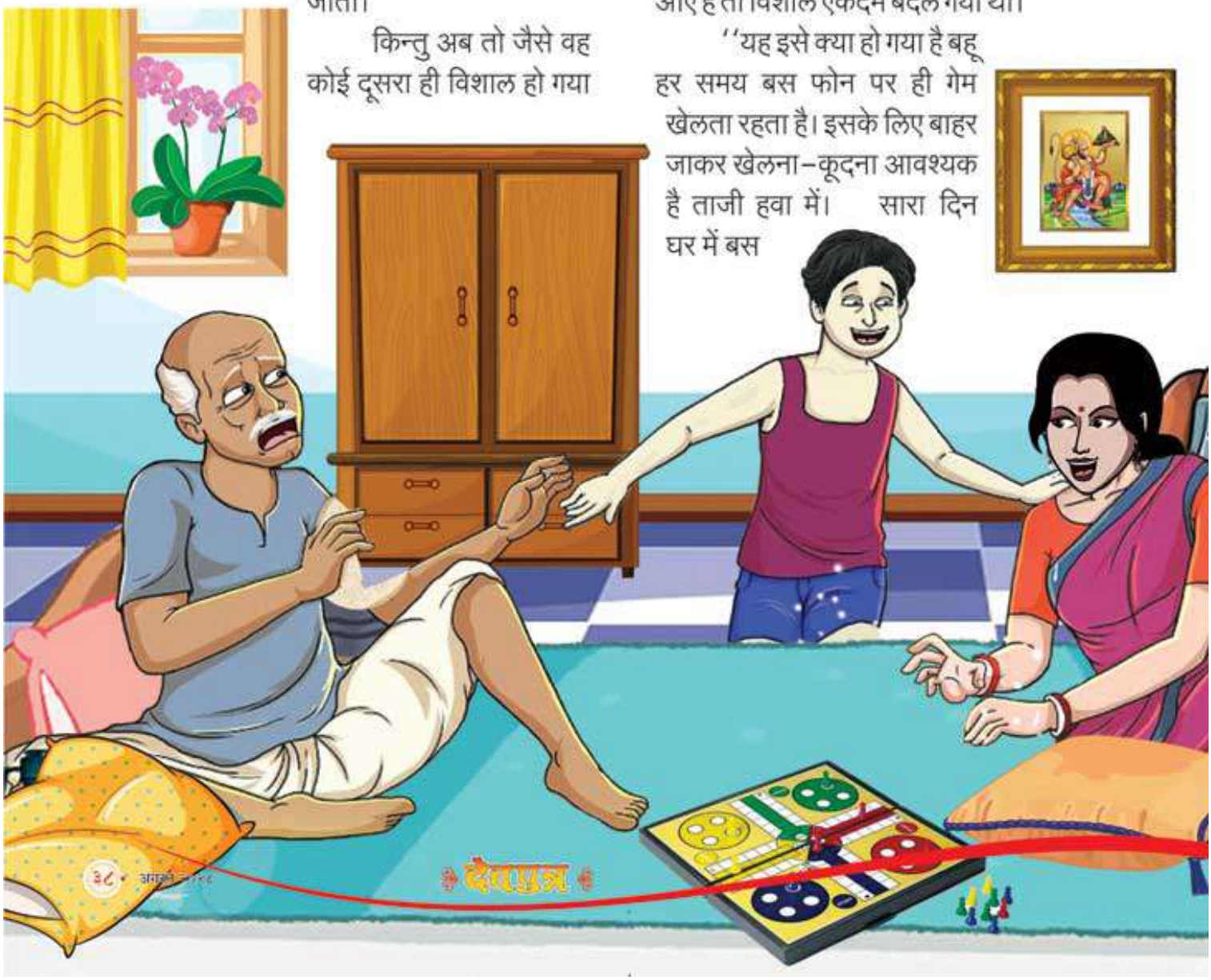

एक सोफे पर बैठा रहता है।'' दादाजी ने विशाल की माँ से कहा।

''क्या करें पिताजी! कोरोना के समय जब शाला भी बंद हो गई थी और बाहर निकलना भी बंद हो गया था तब यह बहुत अधिक उकता गया था। तब समय काटने के लिए हमने इसे मोबाइल पर गेम खेलने दिया। सोचा था कि जब शाला पुन: खुल जाएँगी और मित्रों से मिलेगा तो इसकी यह आदत छूट जाएगी किन्तु इसे ऐसी लत लग गई है कि अब यह मित्रों के साथ खेलने बाहर ही नहीं निकलता।'' माँ ने बताया। ''गलती तुम्हारी भी है, बजाय उसके हाथ में समय काटने के उद्देश्य से मोबाइल पकड़ाने के उसे किसी रचनात्मक कार्य में लगाना चाहिए था। उसे किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए था।'' दादाजी नाराज होते हुए बोले।

''जी पिताजी! यह गलती तो हुई है हमसे।'' माँ सिर झुकाकर बोली।

''बच्चे तो गीली मिट्टी के होते हैं उन्हें जैसा ढाल दो वैसे ही ढल जाते हैं। हमें भी उनका अच्छा-बुरा तय करना पड़ता है। अब मैं ही कुछ सोचता हूँ इसका उपाय।'' दादाजी ने कहा।

दादाजी दो दिन तक सोचते रहे फिर उन्हें इस समस्या का एक बढ़िया उपाय सूझ गया। संध्या को जब विशाल के पिताजी घर आए तो दादाजी ने उन्हें बाजार ले चलने को कहा। जब दोनों वापस आए तो उनके पास एक बड़ा-सा थैला था जो सामान से भरा हुआ था।

अगले दिन जब विशाल शाला से घर वापस आया तो भोजन करके उसने बड़ी मुश्किल से अपना गृहकार्य पूरा किया और माँ का मोबाइल लेकर गेम खेलने बैठ गया। दादाजी कुछ नहीं बोले। संध्या के पाँच बजे उन्होंने चाय पी और अपने लाए हुए सामान में से कुछ सामान लेकर बाहर चले गए।

थोड़ी ही देर बाद बाहर से बच्चों की आवाजें आने लगी। विशाल के घर के बगल में ही एक खुला मैदान था। वहाँ अक्सर कॉलोनी के बच्चे आकर खेलते रहते थे। विशाल ने ध्यान नहीं दिया और अपने मोबाइल में व्यस्त रहा लेकिन थोड़ी देर बाद बच्चों के खिलखिलाने और उत्साह से ''हुर्रे'' ''वाह दादाजी! मजा आ गया।'' जैसी आवाजें आने लगी तो उसने कौतूहलवश खिड़की से बाहर झाँका।

बाहर मैदान में क्रिकेट की पिच बनी हुई थी। दादाजी के साथ कॉलोनी के छोटे-बड़े १५-२० बच्चे नए बैट-बॉल से क्रिकेट खेल रहे थे। दादाजी अंपायर बने थे। कुछ बच्चे फील्डिंग कर रहे थे, कुछ बेंच पर बैठकर खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ा रहे थे।

विशाल का दोस्त रोहन बैटिंग कर रहा था और उसका एक और दोस्त मानव बॉलिंग कर रहा था। अच्छा खासा हल्ला-गुल्ला मचा हुआ था बाहर। विशाल ने फिर अपने मोबाइल में ध्यान केंद्रित करने का प्रयत्न किया और अपना गेम खेलने लगा किन्तु आज बाहर से आती आवाजों में उसका ध्यान बार-बार उचट रहा था। तभी विशाल के पिताजी कार्यालय से घर आए और चाय पीकर बाहर जाने लगे।

''अरे! आप कहाँ जा रहे हैं?'' माँ ने पूछा।

''बाहर क्या बढ़िया खेल जमा है, मैं भी बाहर

जा रहा हूँ दो–एक ओवर खेलकर आता हूँ।'' पिताजी बाहर चले गये। ''मैं भी आती हूँ।'' कहती हुई माँ भी बाहर चली गई।

विशाल को बड़ा आश्चर्य हुआ, यह आज इन सबको हुआ क्या है? वह मोबाइल के गेम में मन लगाने का प्रयत्न करने लगा किन्तु आज उसका मन बार–बार बाहर से आती आवाजों पर जा रहा था। उसने दोबारा खिड़की से झाँककर बाहर देखा। सब खेल में मगन थे। माँ और पिताजी के साथ ही दो–तीन और भी काका–काकी बेंच पर बैठे थे।

कोई पॉपकॉर्न भी लाया था क्योंकि बैठे हुए बच्चे मजे से पॉपकॉर्न खा रहे थे। विशाल का मन आज मोबाइल में बिलकुल ही नहीं लग रहा था। वह थोड़ी देर बैठा रहा मगर बाहर की खिलखिलाहटें जैसे उसे आवाज दे रही थीं। आखिर वह मोबाइल रखकर बाहर जाकर खड़ा हो गया।

''अरे! देखो विशाल भी आ गया, आओ विशाल आओ बैटिंग करो बड़ा मजा आ रहा है। अभी–अभी मैंने रोहन को आउट किया है।'' मानव ने विशाल को देखते ही उत्साह से उसे बताया।

विशाल झिझकते हुए आगे बढ़ा। दादाजी ने उसे एक नया चमचमाता हुआ बैट दिया। विशाल खेलने लगा। कभी बॉल दाएँ से निकल जाती तो कभी बाएँ से लेकिन आखिर विशाल ने बॉल को बैट से मार ही दिया। सभी ने हुर्रे कहकर उसका उत्साह बढ़ाया और जब बॉलिंग करते हुए विशाल ने अंकित को बोल्ड कर दिया तब तो पिताजी ने उत्साह से उसे कंधे पर ही बिठा लिया। देर तक सब तालियाँ बजाते रहे। विशाल बहुत प्रसन्न हो गया। अँधेरा होने पर सब घर चले गए।

विशाल ने बचा हुआ गृहकार्य पूरा किया और खाना खाकर सो गया। दूसरे दिन जब वह शाला से वापस आया तो दोपहर में फिर से माँ का मोबाइल ढूँढ़ने लगा कि तभी दादाजी ने अपने थैले में से लूडो और साँप–सीढ़ी निकाले। माँ भी दादाजी के साथ लूडो खेलने लगी। मोबाइल चार्ज नहीं था इसलिए विशाल गेम नहीं खेल पाया तो वह भी लूडो खेलने लगा। फिर साँप–सीढ़ी खेली गई और फिर व्यापार।

विशाल को समय का पता ही नहीं चला कि कब संध्या हो गई और कब उसके मित्र आकर दादाजी और विशाल को बाहर क्रिकेट खेलने बुलाने लगे। दोनों बाहर चले गये।

कुछ ही दिनों में विशाल मोबाइल व इंटरनेट के गेम्स को भूल गया। उसे अब दोबारा मित्रों के साथ वास्तविक खेलों में आनंद आने लगा था। अब तो वह घर आकर पहले दादाजी को आवाज लगाता कि झटपट उसका गृहकार्य करवा दें और फिर उसके साथ खेलें।

शाम को वह अपने मित्रों से भी पहले दादाजी के साथ मैदान में पहुच जाता। दादाजी ने उसे और उसके मित्रों को और भी कई देसी खेल सिखा दिए थे जैसे पिट्ठू, विष–अमृत, सांखल आदि।

माँ–पिताजी भी बहुत प्रसन्न थे।

''बहुत–बहुत धन्यवाद पिताजी आपने समय रहते विशाल को संभाल लिया अन्यथा तो वह आभासी खेलों में ही उलझता जा रहा था।'' विशाल के पिताजी ने कहा।

''बच्चों को थोड़ा समय और मार्गदर्शन देना पड़ता है तो स्थिति समय रहते ही संभल जाती है। बस थोड़ा धैर्य व समय यही देना पड़ता है बच्चों को।'' दादाजी बोले।

''अब हम हमेशा उसे पूरा समय दिया करेंगे और मोबाइल की लत नहीं लगने देंगे कभी भी।'' माँ ने कहा। दादाजी मुस्कुरा दिए– ''आओ एक–एक ओवर हम भी बेटिंग कर लें।''

तीनों हँस कर मैदान की ओर बढ़ गए जहाँ विशाल अपने मित्रों के साथ क्रिकेट खेल रहा था।

– भोपाल (म. प्र.)

छोटी कहानी

राखी

– पूनम पांडे

मीनू एक वर्ष से अपने शहर से बाहर पढ़ाई कर रही थी उसको पिछले कुछ दिनों से राखी की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा थी।

उसके घर से छात्रावास दो घंटे की दूरी पर था किन्तु उसका मन करता था कि पंख लगाकर उड़ जाये और अपने भाई के पास आ जाये।

राखी के एक दिन पहले वो बस से रवाना हो गई थी। सारे रास्ते वो बस अपने भाई को ही याद कर रही थी। उसको यह विचार ही नहीं था कि बस में कितनी सवारियाँ चढ़ीं, धूम्रपान करने वालों को कंडक्टर ने कितना दण्ड लगाया आदि आदि।

किन्तु जब वह बस से उतरी तो उसने बस स्टैंड पर पेड़ देखा। पेड़ के चारों ओर लता लिपटी हुई थी। ना जाने यह देखकर मीनू को किस बात की याद आई कि वह अपनी नम आँखों को रूमाल से पोंछने लगी।

तभी मीनू ने दिमाग पर जोर लगाया और उसको याद आ गया कि जब वह बारहवीं में पढ़ रही थी तब उसकी शाला में बहुत सुंदर–सी वाटिका थी वहाँ पर माली काका राखी से एक दिन पहले उन सबसे एक–एक राखी सभी पेड़ों को बंधवाया करते थे।

माली काका कहते थे कि– ''यह पेड़ हमें भाई जैसी सुरक्षा देते हैं और अपना पूरा जीवन हमें दे देते हैं कोई–सी भी ऋतु हो फल, फूल, पत्ती, तना, छाल सब चीजें अपने अंगों से तोड़कर, छीलकर ले जाने वाले को कुछ भी नहीं कहते।''

माली काका की इस बात पर सब सहमत होते थे। आज इस लता को पेड़ पर राखी के धागे की तरह लिपटा हुआ देखकर मीनू को अपने बाकी भाई यानि शाला के सारे पेड़ याद आने लगे।

यही सब सोचते–सोचते ही घर आ गया था। भाई तो बहुत ही उत्साहित था। मीनू की बहुत सेवा हो रही थी। किन्तु मीनू का मन कहीं खो–सा गया था।

जब सबने जोर देकर कारण पूछा तो मीनू ने बता दिया कि– ''शाला के उद्यान की रह–रहकर

याद आ रही है।''

अरे..... शाबाश! वहाँ जाना और उन सभी पेड़ों को राखी भी बाँधकर आना।'' उसकी इच्छा को सुनकर माँ ने कहा।

माँ की बात सुनकर मीनू उछल पड़ी। वह अपने भाई राजू के साथ अपने और भाइयों को बहुत ही खुशी-खुशी राखी बाँधने उनके पास चली आई थी।

मीनू को आज राखी की यह थाली सजाने में बहुत ही आनंद की अनुभूति हो रही थी। रंग-बिरंगी थाली, लड्डू, तिलक, रक्षासूत्र से और भी इंद्रधनुषी हो रही थी।

जब वह उद्यान से राखी त्यौहार मनाकर वापस लौटने लगी तो कोयल और बुलबुल गा रही थी। मीनू की आँखें फिर भर आईं। आज उसने अविस्मरणीय राखी मना ली थी।

- अजमेर (राजस्थान)

कविता

रंग-बिरंगी राखी

- पंकज तिरोले, खण्डवा (म. प्र.)

आया राखी का त्यौहार।
लाया भाई-बहिन का प्यार।।
हरियाला सावन है आया।
रंग-बिरंगी राखी लाया।।
राखी सजती बाजारों में।
जैसे जगमग है तारों में।।
करती बहिना इन्तजार।
पाऊँ भाई से उपहार।।
तिलक लगाती श्रीफल देकर।
चौकी पर भाई बैठाकर।।
मुँह में उसे खिलाई मिठाई।
राखी से दी सजा कलाई।।

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

छोटी कहानी

उमंग

– डॉ. जितेन्द्र 'जीत' भागड़कर

सचिन दसवीं बोर्ड का विद्यार्थी है। उसकी परीक्षा अभी–अभी समाप्त हुई है। परीक्षा के बाद से ही सचिन के मन में एक बात थी कि वह गाँव जाकर निरक्षर बच्चों को पढ़ायेगा और साक्षर करेगा। यह बात उसने किसी को बताई नहीं थी।

दिन बीते, और वह दिन आ गया जब सचिन को गाँव आना था। चाचा–चाची और चचेरी बहिन सुनीता के साथ। रेलवे स्टेशन आते–आते सचिन ने अपने मन की बात चाचा–चाची के सामने रखी। दोनों बहुत खुश हुए और इधर स्टेशन पहुँचते ही चाचा जी पुस्तकालय की ओर चल दिए।

एक बड़ा बेग देखकर सुनीता की माँ (सचिन की चाची) ने पूछा– ''इसमें क्या है?'' सुनीता के पति ने कहा– ''भाग्यवान! इसमें घर वालों के लिए उपहार है।'' और तभी गाड़ी प्लेटफॉर्म पर आई, चारों यात्री अपनी–अपनी सीट पर बैठे। रेल चल पड़ी।

एक दिन की यात्रा के बाद चारों यात्री का मुकाम आ गया। गाड़ी प्लेटफॉर्म पर रुकी और इनके साथ आये अन्य यात्री भी अपनी–अपनी बोगी से उतरने लगे। प्लेटफॉर्म से बाहर निकलकर चाचा–चाची ने नाश्ता किया और बच्चों ने फल खाये।

स्टेशन के बाहर सचिन के पिताजी आये, किराये की जॉब बनाकर सभी को लेने। सभी घर पहुँचे। घर पहुँचते ही हाथ–मुँह धोकर निवृत्त हुए खाना–पीना हुआ और चर्चा शुरू हुई चाचा ने सभी उपहार के अभिलाषी बच्चों और बड़ों को रात की प्रतीक्षा करने को कहा।

रात को उपहार देते हुए धर्मेश (सचिन के चाचा) परिवार में सचिन के मन की कही बात रख दी। दादाजी तम–तमाकर बोले– ''छोटा मुँह बड़ी बात।

जैसी हरकत करने का काम है यह।'' पिता ने कहा– महाशय! पहले अपनी पढ़ाई तो पूरी कर लें फिर पहाड़ चढ़ने की सोचें।''

सभी की नकारात्मक बातों को नकारते हुए और समझाते हुए चाचा ने कहा– ''इसमें सचिन का ही तो फायदा है। इससे उसका आत्मबल–साहस बढ़ेगा।''

अगले दिन मुखिया से मिलकर सचिन के चाचा ने गाँव में मुनादी करवा दी कि–

अब कोई बच्चा नहीं रहेगा निरक्षर
सभी बच्चे होंगें साक्षर।

समय भी बताया गया। और कक्षा शुरू होने के पहले शहर से लाया पुस्तकों का पहला उपहार सचिन को दिया। सचिन सभी को सादर प्रणाम करते हुए अपने काम लग गया।

धीरे–धीरे समय व्यतीत होने लगा। गाँव का माहौल बदलने लगा। गाँव सभ्य और शिक्षित हो रहा था। इधर सचिन का परीक्षा–फल भी आ गया।

मुखिया माता–पिता चाचा (सचिन के) और दादाजी हाथ में बड़ा डिब्बा लेकर सचिन की शाला पहुँचे।

सभी ने एक साथ खड़े हो बड़ों का अभिवादन किया।

बड़ों ने बैठने को कहा। सचिन बड़ों के साथ खड़ा रहा। मुखिया जी बोले– ''आज तक हम में से कइयों ने जो कुछ पढ़ा उसका जवाब एक स्वर में चाहूँगा।'' 'एक और एक' तथा 'दो और दो'।

सभी ने कहा (एक स्वर में)– ''एक और एक दो और दो एवं दो चार।''

मुखिया जी ने कहा– ''वाह!'' और आगे कहा– ''आपके शिक्षक ने अपने शाला, गाँव का ही नहीं वरन पूरे शहर का नाम उज्ज्वल किया है।

इन्होंने १०वीं की परीक्षा प्रावीण्य सूची में पास कर इस गाँव को साक्षर किया है।'' ऐसा सुनते ही खुशी से सचिन की आँखें भर आयी।

माँ–पिता, चाचा–दादा का तो खुशी का ठिकाना न था। सबको मिठाई बाँटी गयी और सचिन को आगे के लिए सबने स्नेह आशीर्वाद दिया।

– बालाघाट (म. प्र.)

पहुँचाओ तो जानें

– राजेश गुजर

कृष्ण बने इस बालक को ऊपर लटकी मक्खन की मटकी तक पहुँचाओ।

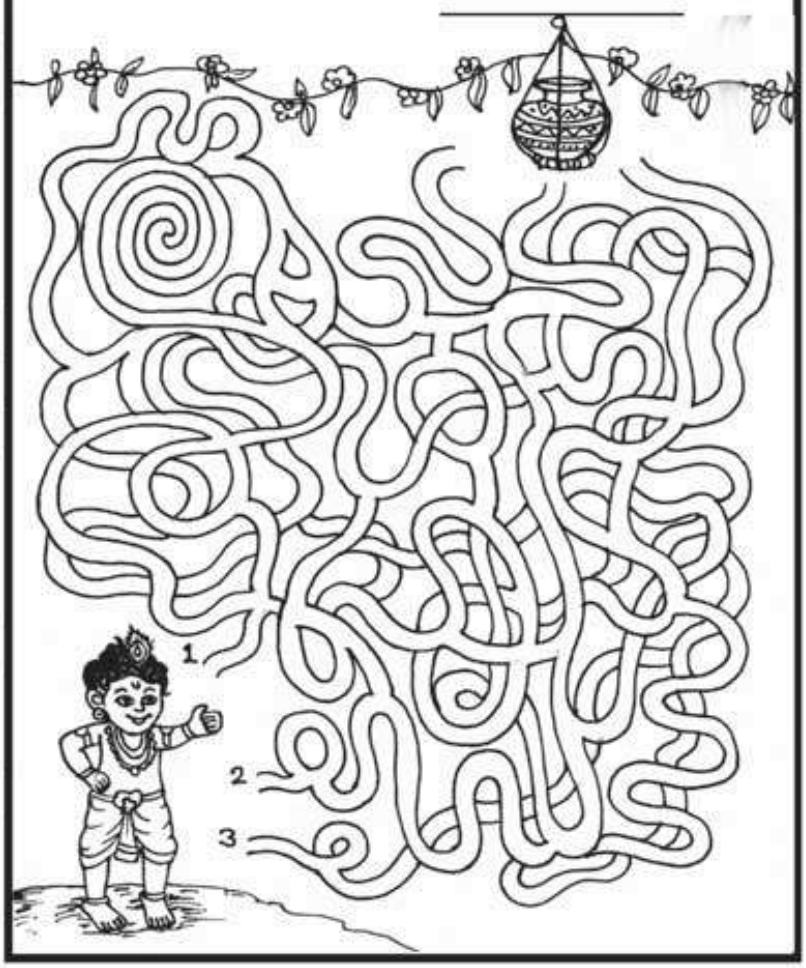

कहानी

मालिक की गुलाम

– नरेन्द्र देवांगन

''क्या बात है कालू! तुम उदास दिख रहे हो?'' लालू गधे ने कालू गधे से पूछा।

''राजा दुर्घटना में घायल हो गया है।'' कालू गधा रूआँसा होकर बोला।

''कैसे?'' लालू ने हैरानी से पूछा।

''अरे! कुछ मत पूछो।'' कालू गधा बोला– ''मालिक ने राजा को मोटरसाइकिल पर सामान लादकर दूसरे शहर भेजा था। न जाने कैसे मोटरसाइकिल गिर गई और राजा घायल हो गया।''

यह सुनकर लालू भी दुखी हो उठा। राजा की सूरत उसकी आँखों के आगे नाच उठी।

मालिक का छोटा बेटा है राजा। उसी के कारण से वे दोनों गधे आज यहाँ हैं वरना मालिक ने कब की उनकी छुट्टी कर दी होती।

लालू का क्रोध मालिक पर फूट पड़ा। जबसे मोटरसाइकिल लाया है, उसने कालू और उसकी तरफ देखना ही बंद कर दिया है। जब देखो तब मोटरसाइकिल को पोंछता और चमकाता रहता है। बड़ा मतलबी है। मोटरसाइकिल आते ही ऐसे मुँह मोड़ लिया, जैसे गधों से उसका कोई वास्ता ही न हो।

गधे बेचारे ईमानदारी से अपने मालिक की सेवा करते थे। उन्हीं के कारण तो उनका मालिक पैसे वाला हो गया था और उसने मोटरसाइकिल खरीद ली थी। लेकिन फिर वही मालिक मोटरसाइकिल को ही अपना सब कुछ समझने लगा।

वह तो राजा ही था, जिसने उन्हें बिकने नहीं दिया वरना मालिक की जिद्द थी कि अब गधों का कोई काम नहीं है, उन्हें बेच देना चाहिए। राजा ने ही उसे ऐसा करने से मना किया। वहीं दोनों को चारा वगैरह खिलाता था।

''अब हमारा क्या होगा, कालू!'' लालू गधे ने कुछ घबराते हुए पूछा।

''होगा क्या, अब हमें चारा नसीब नहीं होगा। भूख से एक दिन हमारे प्राण निकल जायेंगे।'' कालू ने गुस्से से कहा।

लालू अचानक ही बोल पड़ा, ''चलो, उसे मोटरसाइकिल के पास। उसे फटकार लगाएँ।''

कालू गधे ने सोचा, 'आज बदला लेने का अच्छा अवसर है।' वह लालू गधे के साथ मोटरसाइकिल के पास चल दिया। जब मोटरसाइकिल थोड़ी दूर रह गई तो दोनों ने दौड़कर उसमें दुलत्ती मारी।

मोटरसाइकिल घबरा गई, ''क्यों भाइयो! अपने पैर तोड़ने का विचार है क्या?''

''अपने पैरों को तो नहीं, लेकिन तेरे हाथ–पैर तोड़ने का इरादा अवश्य है। तेरे कारण से राजा घायल हुआ और आज हम मालिक के गुलाम बन गए हैं।'' कालू गुस्से से उबलता हुआ बोला।

''अरे भाई! मेरे कहने का मतलब है कि तुम मुझे मारोगे तो मुझ पर तो कोई असर नहीं पड़ेगा।

लेकिन तुम्हारे पैर टूट गए तो तुम्हें बड़ी परेशानी हो जाएगी।'' मोटरसाइकिल ने सफाई देते हुए कहा।

''अच्छा! तो तू अपने-आपको इतनी ताकतवर समझती है।'' लालू गधा बोला।

''नहीं भाई! तुम मुझे गलत समझ रहे हो। मेरे कहने का अर्थ तो यह है कि मुझे दु:ख-दर्द कुछ नहीं होता।'' मोटरसाइकिल ने लालू और कालू को समझाया।

''अच्छा! तुम कोई विशेष हाड़-मांस की बनी हो जो तुम्हें दु:ख-दर्द नहीं होता?'' लालू गधे ने कहा।

''मेरी बात का बुरा मत मानना। तुम लोग कुछ जानते नहीं, इसीलिए तो तुम्हें गधा कहा जाता है।'' मोटरसाइकिल ने जवाब दिया।

''अरे! हम लोग तुम्हारी तरह किसी को दु:ख नहीं पहुँचाते। तुमने बेचारे राजा की क्या हालत कर दी है। दर्द से तड़प रहा है।'' कालू ने आँखें दिखाते हुए कहा।

''तो इसमें मेरी क्या गलती है?'' मोटर-साइकिल ने भी कुछ सख्ती से कहा- ''तुम लोग ही बताओ मैं क्या कर सकती थी?''

''तुम राजा को गिरने से तो बचा ही सकती थी।'' कालू ने कहा।

''अरे भाई! तुम लोग समझने की कोशिश क्यों नहीं करते? मुझ में और तुम में जमीन-आसमान का अंतर है। तुम ठहरे जानवर, मैं ठहरी मशीन। तुम में सोचने-समझने की शक्ति होती है। तुम लोग किसी को गिरने से बचा सकते हो। मैं तो स्वयं दूसरों की सहायता से चलती हूँ। किसी को गिरने से क्या बचाऊँगी। मुझ पर सवार मालिक चाहता है तो मैं चलती हूँ, नहीं तो खड़ी रहती हूँ।'' मोटरसाइकिल ने अपने बारे में बताया।

कालू और लालू को लगा कि मोटरसाइकिल ठीक ही कह रही है। उसका सोचने-समझने से कोई वास्ता नहीं है। वे उसे अभी तक गलत समझ रहे थे। वह तो मशीन है, केवल मशीन। उसे जैसे चलाया जाता है, वैसे ही चलती है।

लालू गधा मन ही मन सोच रहा था, 'हम जानवर ही सही, लेकिन इस मशीन से अच्छे हैं। अपनी बुद्धि से कुछ सोच-समझ तो सकते हैं। अपनी बुद्धि से सही-गलत का निर्णय ले सकते हैं। यह तो दूसरों की गुलाम है। ऐसी गुलाम जो अच्छाई-बुराई का विचार किए बिना चालक की मर्जी पर अंधी होकर चलती है और तब तक चलती रहती है, जब तक कि उसे रोका नहीं जाता।''

''क्षमा करना मोटरसाइकिल बहन! हम दोनों तुम्हारी मजबूरी को नहीं समझ सके।'' लालू गधे ने कहा।

''भाई! तुम लोग अपने को मालिक का गुलाम कह रहे थे। अब तुम ही बताओ कि मालिक का गुलाम कौन है?'' मोटरसाइकिल ने पूछा।

''मालिक की गुलाम तो तुम हो, हम नहीं।'' लालू और कालू दोनों गधों ने एक साथ उत्तर दिया।

- रायपुर (छत्तीसगढ़)

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध बालसाहित्यकार पद्मा चौगाँवकर की दो अनूठी पुस्तकें

सरहद के उस पार
मूल्य- १५०/-

विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन मूल्यों के प्रति सजग रहते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा जगाने वाला रहस्य रोमांच व कुतूहल से भरपूर यह सचित्र उपन्यास किशोरों के लिए विशेष रुचिकर होगा।

प्रकाशक- वंश पब्लिकेशन, बी-२०९, गीत स्काई वैली, मित्तल कॉलेज रोड, नवी बाग, भोपाल-४६२०३८ (म. प्र.)

कहानियाँ गुद गुदीवाली
मूल्य- १००/-

हास्य रस हम सबको तुरंत प्रभावित करता है। संभवत: इसीलिए रसों के क्रम में प्राय: सूची में शृँगार के बाद हास्य का नाम आता है। पद्माजी ने इस पुस्तक में ऐसी ही हँसाने वाली बारह मनोरंजनपूर्ण कहानियाँ प्रस्तुत की हैं। भाषा सरल और शैली चुटीली, एक स्वस्थ हास्य का सृजन करती है।

प्रकाशक- बोधि प्रकाशन, सी-४६, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रीयल एरिया, एक्सटेंशन, नाला रोड, २२ गोदाम, जयपुर-३०२००६ (राजस्थान)

श्री. श्यामपलट पाण्डे समकालीन बालसाहित्य के स्थापित रचनाकार हैं। अविचल प्रकाशन, 'सावित्री' १५-वृन्दाविहार, अमृत आश्रम, हल्द्वानी (नैनीताल)-२६३१३९ उत्तराखण्ड से प्रकाशित उनकी दो नवीन बाल काव्य कृतियाँ हैं।

घोड़ा उड़ता पंख पसारे
५१ रोचक बाल कविताएँ
मूल्य- २००/-

आगे बढ़ते रहेंगे
४७ बोधक बाल कविताएँ
मूल्य- २००/-

केया की खुशबू
मूल्य- १८०/-

सशक्त बाल कथाकार हंसा विश्नोई के इस बाल कथा संग्रह में ग्यारह कथाओं की यह उत्सुकता जगाती, मनोरंजन और उत्साह जगाती शृँखला है। सभी कहानियाँ नए परिवेश व आधुनिक बाल संसार का रोचक दृश्य प्रदर्शित करती हैं।

संयुक्त प्रकाशक-पं.जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी (राज.) एवं साहित्यागार धामाजी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता जयपुर-३०२००३ (राज.)

बालसाहित्य शोधकर्त्ताओं के लिए

शाहजहाँपुर उ. प्र. के विद्वान शोधकर्त्ता, बालसाहित्य अध्येता डॉ. श्रीकांत मिश्र ने रूहेलखण्ड के विशेष सन्दर्भ में हिन्दी बालसाहित्य का इतिहास एवं समीक्षा नामक शोधग्रंथ प्रकाशित करवाया है। नालंदा प्रकाशन सी/५/१८९, यमुना विहार दिल्ली-११००५३ से प्रकाशित १३९५/- मूल्य पर उपलब्ध यह शोधग्रंथ बाल साहित्य अध्येताओं के लिए उपादेय है।

कितनी बहनें!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

पक्षी पहेलियाँ

– श्यामपलट पांडेय

१)
काली काया,
कूँ–कूँ बोली।
लगती सबको,
बड़ी सुरीली।।

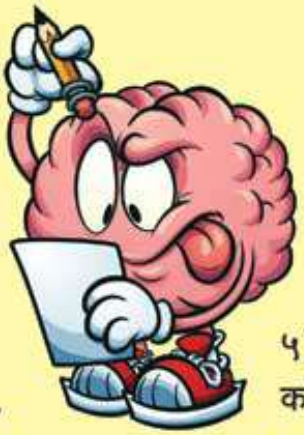

२)
'गौ' से नाम शुरू होता है,
अंत में उसके 'या' है आता।
बच्चो! उसका नाम बताओ,
गाँव–गरीबों से है नाता।।

३)
'पी' को सदा बुलाया करता,
कोई उसे ढूँढ़ कर ला दो।
जीवन–भर प्यासा है रहता,
स्वाती का जल उसे पिला दो।।

४)
पंख खोल कर जब भी नाचूँ,
बेहद सुंदर मैं दिखता हूँ।
मेघों का प्रिय मित्र कहाऊँ,
साँपों में मैं डर भरता हूँ।।

५)
काँव–काँव मैं करता रहता,
छत–मुँडेर पर शोर मचाता।
शनि का वाहन भी हैं कहते,
पितर–पक्ष में खाना पाता।।

– अहमदाबाद (गुजरात)

उत्तर :– १) कोयल, २) गौरया, ३) पपीहा, ४) मोर, ५) कौआ।

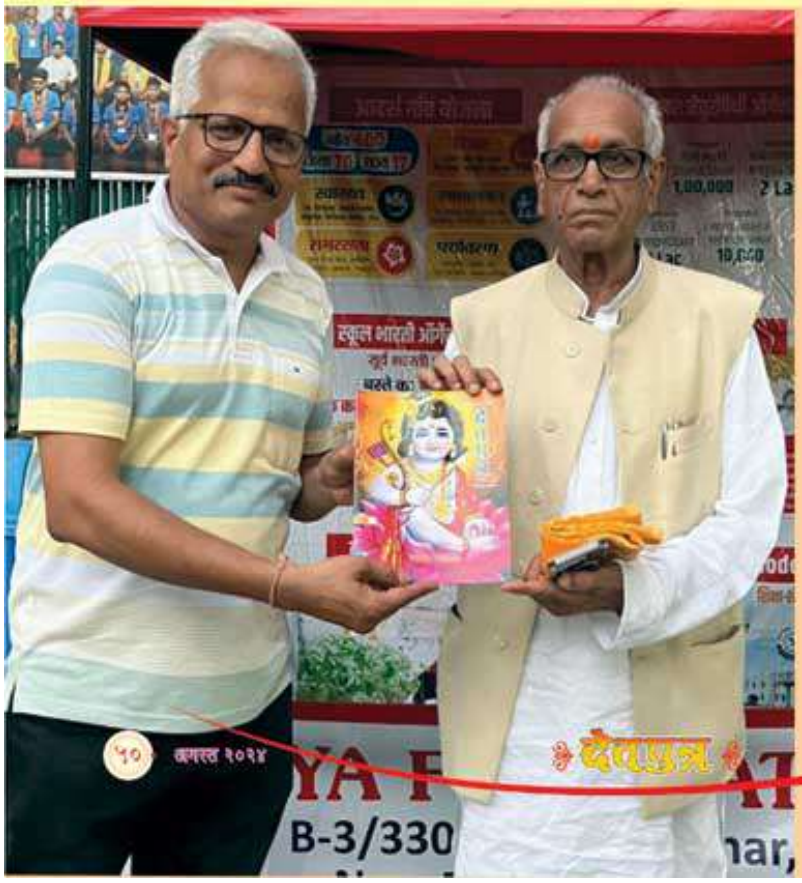

मा. श्री. चम्पतराय जी को 'अवधेश अंक' भेंट

नई दिल्ली। 'देवपुत्र' के संचालक न्यास 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के यशस्वी न्यासी सीए राकेश जी भावसार ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव माननीय श्री चम्पतराय जी को 'देवपुत्र' के 'अवधेश अंक' की प्रति भेंट की। श्री. चम्पतराय जी ने इस प्रकाशन पर आनन्द व्यक्त किया।

कविता :

१२ अगस्त हाथी दिवस पर विशेष

हाथी

– हरिन्दर सिंह गोगना

हमारे मोहल्ले में आया हाथी,
देखने दौड़े हम सब साथी।
हाथी पर बैठा था साधु,
हाथ में उसके जैसे जादू।

हाथी के सिर हाथ लगाता,
हाथी अपनी सूंड उठाता।
करता नमस्कार हाथी,
बड़ा ही समझदार हाथी।
लोग दान कुछ देने आते,
उसके आगे शीश नमाते।
आकृति में विशाल है हाथी,
कुदरत का कमाल है हाथी।
बच्चों के मन भाया हाथी,
अपने मोहल्ले में आया हाथी।

– पटियाला (पंजाब)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०७/२०२४ | प्रेषण तिथि ३०/०७/२०२४ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

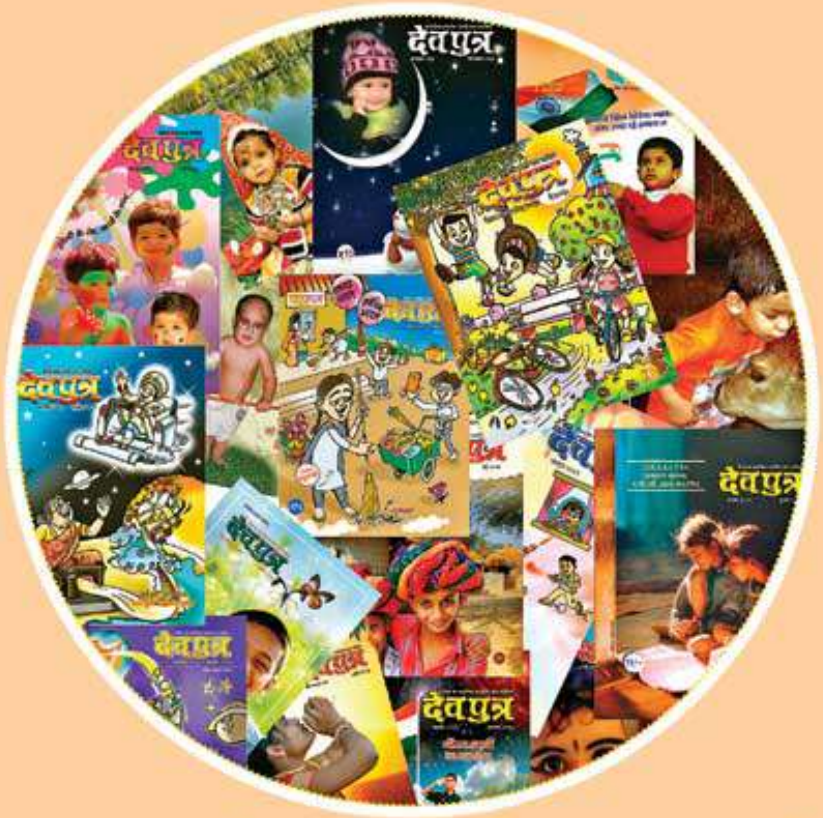

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी